परिन्दे : निर्मल वर्मा

पीड़ा भरी प्रतीक्षा

निर्मल वर्मा नई कहानी के विशिष्ट रचनाकार हैं जिन्होंने हिंदी कहानी को नया रूप, भाव-भंगिमा और कलात्मक सार्थकता प्रदान की। निर्मल वर्मा की कहानियों में ऐकान्तिक, व्यक्तिपरक और अंतर्मुखी अनुभूतियाँ अभिव्यक्ति हुई हैं। उनका कथा संसार बाहरी दुनिया के घातों-प्रतिघातों से नहीं बल्कि व्यक्ति के मन में चल रही उथल-पुथल से निर्मित होता है। निर्मल वर्मा की कहानी का यथार्थ-बोध अनुभूतिपरक है। इसमें व्यक्ति और परिवेश का संघर्ष चेतन और उपचेतन मानसिक स्तरों को प्रभावित करता है। इसे अदृश्य यथार्थ की संज्ञा भी दी जा सकती है जिसे कुछ विशेष क्षणों में महसूसा जा सकता है जिसका संबंध मनुष्य के आंतरिक संसार से होता है। इसे आंतरिक या सूक्ष्म यथार्थ भी कहा जा सकता है। 'नई कहानी' के लेखकों ने नई भूमि की तलाश की; घटना व्यापारों के स्थान पर उन्होंने मनुष्य के मन को अपनी कहानी का विषय बनाया।

'परिंन्दे' एक व्यक्ति के मन की कथा है। इसमें व्यक्त यथार्थ सूक्ष्म और आंतरिक है। लतिका एक पहाड़ी स्थल पर स्थित कॉन्वेंट स्कूल में अध्यापिका है। कल से स्कूल में छुट्टियाँ होने वाली हैं और हर बार की तरह इस बार भी लतिका जाड़े की छुट्टियों में स्कूल में ही रहने वाली है। कहानी के आरंभ में दो प्रसंगों द्वारा यह बात पाठक को बताई गई है। पहली बार तब जब लतिका लड़कियों के कमरे में जाती है और उनसे रात में जगने के लिए जवाब-तलब करती है। जब उसे यह अहसास होता है कि कल सारी लड़कियाँ छुट्टी में घर जा रही हैं तो उसे लगता है कि "इस छोटे-से हिल स्टेशन पर रहते आज उसे अरसा हो गया, किंतु कब समय पतझड़ और गर्मियों का घेरा पार करके सर्दियों की छुट्टियों को गोद में

Scanned by CamScanner

सिमट जाता है, उसे याद नहीं रहता।" जब लड़कियाँ उससे पूछती हैं कि "मैडम, छुट्टियों में आप घर नहीं जा रहीं" तो वह जवाब देती है "अभी कुछ पक्का नहीं है; आई लव स्नो-फॉल!" लतिका हर साल अपने विद्यार्थियों से यही कहती है। उसे लगा कि लड़कियाँ उसे संदेह की दृष्टि से देख रही हैं। "उसका सिर चकराने लगा, मानो बादलों का स्याह झुरमुट किसी अनजाने कोने से उठकर उसे अपने में डुबो लेगा।" लतिका से फिर यही सवाल डॉक्टर मुकर्जी करते हैं और लतिका को लगता है कि वह कभी यहाँ से निकल नहीं सकेगी। वह तो पिंजड़े में बंद परिंदा है। उसकी किस्मत उन परिंदों की तरह कहाँ जो झुंड के झुंड नीचे अनजान देशों की ओर उड़ जाते हैं - पहाड़ों की सुनसान नीरवता से परे।

अकेलापन लतिका के जीवन का हिस्सा बन गया है। बाहर फैली धुंध उसके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन गई है। वह इस एकांत नीरवता को छोड़कर बाहर नहीं निकलना चाहती। धुंध को उसने अपना बना लिया है।

डॉक्टर और ह्यूबर्ट की बातचीत से पता चलता है कि लतिका कुमाऊँ रेजिमेंट के किसी कैप्टेन गिरीश नेगी से प्यार करती थी। कश्मीर के किसी मिशन पर उसकी मृत्यु हो गई है। अभी तक कैप्टेन नेगी लतिका की स्मृतियों से ओझल नहीं हुआ है। उसे लगता है कि वह आएगा। डॉक्टर को लतिका की यह प्रतीक्षा बेमानी और पागलपन लगता है। वह कहता है - "लतिका ... वह तो बच्ची है, पागल! मरने वाले के संग खुद थोड़े ही मरा जाता है।" डॉक्टर के इस कथन में पीड़ा है क्योंकि बर्मा पर जापानियों के आक्रमण के समय उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। डॉक्टर का यह कथन वस्तुतः खुद को दिलासा देने वाला है क्योंकि वह भी अपनी पत्नी को भुला नहीं पाया है। इसीलिए तो उसे "अजनबी की हैसियत से परायी ज़मीन पर मर जाना काफ़ी खौफनाक" लगता है। वह यह भी कहता है कि पीछे किसी का न होना एक प्रकार की बेफिक्री भी पैदा करता है। किंतु कुछ लोग आजीवन प्रतीक्षा करते हैं। उनकी मौत अंत तक पहेली बनी रहती है क्योंकि उनका जीवन स्पंदनहीन होता है और उन्हें आखिरी दम तक मरने का अहसास नहीं होता।

लतिका की पीड़ा भरी प्रतीक्षा इस कहानी की मूल संवेदना है, मुख्य कथ्य है। वह आजीवन इस घाटी में अपने प्रेमी का इंतज़ार करना चाहती है। उसकी अनुभूति जड़ हो चुकी है। लतिका के किस्से से अनजान ह्यूबर्ट जब उसे प्रेम पत्र देता है तो उसे लगता है कि "ह्यूबर्ट ही क्यों, वह क्या किसी को भी चाह सकेगी उसी अनुभूति के संग, जो अब नहीं रही, जो छाया-सी उसपर मँडराती रहती है; न स्वयं मिटती है, न उसे मुक्ति दे पाती है।"

यहाँ सवाल यह पैदा होता है कि क्या लतिका इस छाया से मुक्ति चाहती है? अगर वह इससे मुक्ति चाहती तो स्वच्छंद परिंदों की तरह वह भी पहाड़ी से

Scanned by CamScanner

बाहर निकलती अनजान देशों की ओर। ह्यूबर्ट का प्रेम निवेदन उसे झकझोरता। वह अपने जीवन को फिर से सँवारने का प्रयास करती। लेकिन वह तो अपने को तिल-तिल कर मार रही है। उसे लगता है कि वह बूढ़ी हो रही है। उसके सामने स्कूल की प्रिंसिपल मिस वुड का चेहरा घूम जाता है। यह सोचकर ही उसके बदन में झुरझुरी दौड़ जाती है।

पूरी कहानी लतिका की यादों में डूबी हुई है। पूरा परिवेश, समस्त वातावरण, पत्तों की खड़खड़ाहट, मेघ का गर्जन, चारो ओर फैली धुंध, 'लीड काइण्डली लाईट' की धुन, चैपल के लम्बे चौकोर शीशों पर झिलमिलाती बारिश की मुलायम धूप उसे गिरीश के आने का संदेशा देती है। उसे हर पल लगता है - "आ गया...देखो आ गया। " स्मृति की तह से बाहर आते ही सब कुछ छिन्न-भिन्न हो जाता है। परंतु अतीत लतिका के जीवन का हिस्सा बन चुका है। वह अपने अतीत से मुक्त नहीं होना चाहती। पीड़ा भरी इस प्रतीक्षा में ही उसे आनंद आने लगा है। "लतिका ने चैपल से बाहर आते हुए देखा कि वीपिंग लॉज की भीगी शाखाओं में धूप में चमकती हुई बारिश की बूंदें टपक रही थीं।" दुख और पीड़ा से आनंद प्राप्त होना विरह की पराकाष्ठा है। यह विरह एक भक्त के विरह के समान उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठापित है।

जूली का प्रेम प्रसंग पुनः लतिका को उसके अतीत में लौटा देता है। जूली लतिका की शिष्या है। वह हॉस्टल में रहती है। जूली का एक प्रेम पत्र उसके हाथ लग जाता है। इसके लिए वह जूली को डाँटती-फटकारती है और उसे सावधान करती है कि यह उम्र प्रेम करने की नहीं है। वह जूली का पत्र अपने 'कब्जे' में रख लेती है। अचानक लतिका को लगता है कि "अपने अभाव का बदला क्या मैं दूसरों से ले रही हूँ? " वह सोचती है कि हो सकता है जूली के लिए प्रेमानुभूति का यह पहला अवसर हो जिसे कोई भी लड़की अपने पास संभाल कर रखती है। इससे जहाँ एक ओर अनिर्वचनीय सुख मिलता है वहाँ मर्मांतक पीड़ा भी झेलनी पड़ती है। इस पीड़ा में भी सुख है।

लतिका भी अपने अतीत की स्मृति की पीड़ा में जी रही है। उसने अपनी स्मृतियों को बड़े चाव से संभाल कर रखा है। वह गिरीश के साथ बिताए हर क्षण को याद करती है। यही उसके जीने का सहारा है। उसे वह बहका-सा पगला क्षण याद आता है जब उसने भय और विस्मय के बीच भिंचे क्षण को जिया था। उसे लगता है आज भी गिरीश मुड़ेगा और उसकी 'नर्वस' मुसकुराहट दिखाई देगी। वह जहाँ जाती है वहाँ उसे गिरीश के साथ बिताए क्षण याद आते हैं।

जैसे-जैसे अतीत लतिका से दूर होता जा रहा है वैसे-वैसे वह उसकी स्मृति से फिसलता प्रतीत होता है। ऐसा लगते ही वह हड़बड़ा जाती है। कभी-कभी

Scanned by CamScanner

उसे लगता है कि वह जो याद करती है वही भूलना भी चाहती है परंतु जब वह सचमुच भूलने लगती है तो ऐसा लगता है कि कोई उसका सब कुछ छीन कर ले जा रहा हो। उसे लगता है कि उसकी यह स्मृति कहीं गुम न हो जाए। अपनी इसी स्मृति को जिलाए रखने के लिए वह पहाड़ छोड़कर नीचे नहीं जाना चाहती क्योंकि पहाड़ का एक-एक पत्थर, पेड़ और पगडंडियाँ उसके प्यार की गवाह हैं। बचपन में भी वह भूलने और खोजने का खेल खेलती थी। पहले खोया हुआ खिलौना ढूँढती थी, परंतु मिल जाने पर भी वह उसे ढूँढने का बहाना करती रहती थी। बचपन का यही खेल उसकी नियति बन जाती है। यह खेल वह आज भी खेल रही है क्योंकि इससे खोयी हुई चीज़ याद रहती है, इसलिए भूलने का भय नहीं रहता। आज भी वह गिरीश को, अपने प्यार को, याद करने का बहाना ढूँढती है जो उसकी स्मृति से फिसलता जा रहा है। समय के साथ-साथ गिरीश का चेहरा धुँधला पड़ता जा रहा है। धूल पड़े फोटोग्राफ को साफ कर जैसे वह उसके चेहरे को पढ़ने का प्रयास करती है। अब पहले जैसा दर्द नहीं होता, बस उस दर्द की याद भर कर पाती है। वह जान-बूझकर घाव को कुरेदती। परंतु घाव धीरे-धीरे भरता जा रहा है। वह कोशिश कर रही है लेकिन उसका प्यार उसे दूर और दूर होता चला जा रहा है।

लतिका के अंदर बराबर एक सवाल गूँजता रहता है 'वाट डू यू वाण्ट?' वह इस सवाल का जवाब जानती भी है और नहीं भी जानती है। वह अपने अतीत को भूलना नहीं चाहती पर प्रकृति का नियम उस अतीत को उससे दूर लिए जा रहा है। उसे सारी प्रकृति ठिठकी हुई नजर आती है जैसे वह किसी की बाट जोह रही हो, किसी की टोह में स्तब्ध खड़ी हो। लतिका को केवल प्रकृति ही नहीं बल्कि डॉ. मुकर्जी और मिस्टर ह्यूबर्ट भी किसी की प्रतीक्षा कर रहे प्रतीत होते हैं। उसे अपने ही इस सवाल का जवाब नहीं मिलता कि वे किसकी और क्यों प्रतीक्षा कर रहे हैं?

ह्यूबर्ट लतिका से प्रेम करता है। वह उसे प्रेम पत्र भी लिखता है। लेकिन जैसे ही उसे लतिका के खोए प्यार का पता चलता है उसे अपने ऊपर ग्लानि होती है। जिस प्रकार लतिका अपने प्यार को नहीं भुला पाती उसी प्रकार ह्यूबर्ट भी लतिका को अपने दिल से निकाल नहीं पाता। वह हृदय रोग से ग्रस्त है पर वह मरना नहीं चाहता। एक दिन वह शराब पी लेता है और नशे में बड़बड़ाता है - "इन द बैकलेन ऑफ द सिटी, देयर इज़ ए गर्ल हू लव्स मी।" (इस गली के पीछे एक लड़की रहती है जो मुझे प्यार करती है।)

डॉक्टर जो अपने दर्द को भूल चुका है, वह ह्यूबर्ट और लतिका के दर्द से चिपके रहने पर तरस खाता है। ह्यूबर्ट की हालत देखकर वह कहता है - "वैसे हम सबकी अपनी-अपनी जिद होती है; कोई छोड़ देता है, कुछ लोग आखिर तक उससे

Scanned by CamScanner

चिपके रहते हैं।" वह लतिका के यादों में लिपटे रहने को सही नहीं मानता। उसका चार है - "कभी-कभी मैं सोचता हूँ, मिस लतिका, किसी चीज़ को न जानना यदि गलत है, तो जान-बूझकर न भूल पाना, हमेशा जोंक की तरह चिपटे रहना यह भी गलत है।" मनुष्य को जीवन में आई कठिनाइयों का सामना करना चाहिए, हार नहीं मान लेनी चाहिए। जीवन को दर्द में न डुबोकर यदि उसे नई खुशियों से जोड़ा जाए तो जिंदगी काफी दिलचस्प हो जाती है। जिससे हम प्रेम करते थे उनके न रहने पर यदि हम धीरे-धीरे उन्हें भूलते जाते हैं तो इसका मतलब नहीं कि हम उससे प्यार नहीं करते। डॉक्टर अपनी मिसाल देते हुए कहता है कि वह भी जिंदगी जीता है, अतीत से चिपके रहने की जिद नहीं है परंतु इसके बावजूद वह अपनी पत्नी से जितना प्यार पहले करता था उतना ही आज भी करता है।

लतिका डॉक्टर के इस जीवन दर्शन से अछूती नहीं रह पाती। कहानी के अंत में एक प्रसंग है जिसमें लतिका जूही के कमरे में जाती है और उसके सोए रहने पर चुपके तकिए के नीचे पत्र रखकर चली आती है। लतिका का यह व्यवहार अपने प्यार को याद करने का ही एक प्रयास है या भूलने का! कहानीकार की कुशलता इस बात में है कि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहता। पाठक के मन में उधेड़बुन छोड़ जाता है।

'परिंदे' केवल एक प्रेम कहानी भर नहीं है। यह भी कह सकते हैं कि 'प्रेम कहानी' तो कहानी कहने का बहाना मात्र है। यह दो प्रकार के जीवन दर्शन के बीच टकराहट की कहानी है। लतिका और ह्यूबर्ट जहाँ पीड़ा भरी प्रतीक्षा को ही अपना जीवन दर्शन बना चुके हैं वहीं डॉक्टर मुकर्जी अपने अतीत को झटककर वर्तमान में जीने के हिमायती हैं। उनके जीवन-दर्शन में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है, जीवन को उत्साह से जीने की ललक है। डॉक्टर ने लतिका और ह्यूबर्ट से ज्यादा ही खोया है। उनका न केवल वतन छूटा बल्कि वतन छोड़ते समय उनकी पत्नी का भी देहांत हो गया। यदि डॉक्टर अपने अतीत से चिपके रहता तो उसकी हालत भी हयूबर्ट जैसी ही हो जाती। ह्यूबर्ट हमेशा बीमार रहता है और बीमार सा दीखता है। वह दुखी रहता है। मौत का भय उसे हमेशा सताता रहता है। ज्यादा त्रस्त होने पर वह शराब में डूब जाता है। फिर भी वह अपने आतंक और भय से मुक्त नहीं हो पाता।

इसी प्रकार, लतिका भी अपनी बनाई परिधि के भीतर ही जीना चाहती है। वह अंतर्मुखी है। इतनी अंतर्मुखी कि गिरीश से पूरी तरह अपने प्रेम का इज़हार भी नहीं कर पाती। जहाँ डाक्टर के जीने में एक उम्मीद है, रोशनी है वहीं लतिका के सोचने का तरीका निराशाजनक और हतोत्साहित करने वाला है। लतिका के जीवन में घोर निराशा है। वह लगभग टूट चुकी है। इसीलिए वह डॉक्टर से पूछती है कि

Scanned by CamScanner

"डॉक्टर, सब कुछ होने के बावजूद वह क्या कुछ है, जो हमें चलाए चलता है, हम रुकते हैं तो भी अपने बहाव में हमें घसीट लिए जाता है।" अपने दुख और निराशा को दार्शनिक जामा पहनाने के लतिका के इस अंदाज़ को डॉक्टर हँस कर हवा में उड़ा देता है। वह लतिका पर खीज भी उठता है। कुछ लोग सब कुछ खोकर भी हँसते हैं; कुछ लोग थोड़ा-सा खोकर यह मान लेते हैं कि अंधेरे में जो खो गया है, जो मिल नहीं रहा, शायद कभी नहीं मिल पाएगा। यह जीवन दर्शन आदमी को दुखी करता है। दुनिया इससे नहीं चलती। दुनिया तो डॉक्टर के दर्शन से चलती है। कहते भी हैं कि उम्मीद पर ही दुनिया कायम है। नाउम्मीदी खुद को नहीं सारी दुनिया को अंधकारमय बना देती है। कहानी के अंत में लतिका इस अंधकार से निकलने का एक छोटा-सा प्रयास करती है जब वह जूली को उसका पत्र चुपचाप लौटा देती है।

'परिन्दे' में चित्रित वातावरण लतिका की संवेदनाओं और अनुभूतियों की परछाईं हैं। सरसरी तौर पर देखने से लग सकता है कि इस कहानी का वातावरण और चित्रण विदेशी है परंतु ऐसा है नहीं। कहानी में चित्रित परिवेश, लतिका की अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ ठेठ भारतीय हैं। लतिका का गिरीश से प्रेम, इंतज़ार, स्मृतियों की मधुर वेदना में खोए रहना भारतीय सोच का ही प्रतिबिंब है। परिंदों को उड़ता देखकर अपने जीवन के अभाव को महसूस करना भारतीय सोच का ही परिणाम है। सबसे बड़ी बात है पश्चिम में 'प्रतीक्षा' को कोई जगह नहीं मिलती। प्रतीक्षा तो भारतीय संवेदना है। 'प्रतीक्षा' की परंपरा तो कालिदास से ही चली आ रही है और विरह वेदना सहती नायिकाओं से तो सारा भारतीय साहित्य भरा पड़ा है। यहाँ तक कि भक्ति साहित्य भी इससे अछूता नहीं है।

यह विरह वेदना वातावरण से भी झलकती है। पात्रों की आंतरिक गतियों और मनःस्थितियों से भी यही भाव प्रकट होता है। इंतज़ार का भाव पूरे परिवेश में छाया हुआ है। "और प्यानो के सुर अतीत की धुंध को बेधते हुए स्वयं उस धुंध का भाग बनते जा रहे हों" - यह धुंध बाहरी नहीं है, लतिका के मन के किसी कोने की धुंध है। हवा चलने से कॉरीडोर में जमे कुहरे का सिहरना भी लतिका के मनोभावों को ही व्यक्त करता है। इस कहानी में पात्र और परिवेश एकमएक हो गए हैं। स्कूल का बंद होना, छुट्टियों में सबका घर जाना, केवल लतिका का पीछे छूट जाना -- सब उसके अकेलेपन को बढ़ाते हैं। अपनी ही यादों में खोयी लतिका सबका सामान बँधवाती है लेकिन खुद उदास वातावरण में टंगी रहती है। अपनी सुस्ती मिटाने के लिए कभी लड़कियों के साथ पिकनिक चली जाती है, प्रेयर में प्यानो सुन लेती है और फिर अपनी यादों में खो जाती है और अकेले में पिंजड़े में बंद परिंदे के समान तड़पती है, घुटती रहती है। वातावरण की एकरसता लतिका के जीवन की ही एकरसता है।

Scanned by CamScanner

इस कहानी में घटना नहीं है। इसमें एक व्यक्ति का बोध है जिसमें त्रासदपूर्ण तनाव है। पूरी कहानी में एक मनःस्थिति है। इसमें एक सोच है जो विभिन्न प्रसंगों से खुलती जाती है। एक प्रगाढ़ उदासी पूरी कहानी में पसरी हुई है। इसमें इसी एक मूड के कई चित्र हैं जिसमें एक ही भावना, संवेदना, अनुभूति और मनःस्थिति अलग-अलग रंगों में रंगी गई है। कहानी का कथ्य, परिवेश, चरित्र सब एक ही भाव को बार-बार अलग-अलग कोणों से व्यक्त करते नजर आते हैं। कहानी के अंत में इस मूड से मुक्त होने का संकेत है -- "जब वह कॉरीडोर में आयी बारिश की बौछार तेज़ी से पड़ने लगी थी। करीमुद्दीन ने अपने माउथ ऑर्गन पर एक नई फिल्म की धुन छेड़ दी।"

यह कहानी प्रकारांतर से आधुनिक जीवन/नारी के संत्रास को अभिव्यक्त करती है जिसमें अकेलेपन की ठंडी खामोशी के साथ-साथ घुटी-घुटी चीख और आतंक भी है। 'परिन्दे' के पूरे परिवेश में गहरी उदासी और करूणा है। परंतु इसमें गति नहीं है। सब कुछ ठहरा-ठहरा सा प्रतीत होता है। इस उदासी और करूणा के चित्रण में नयापन है, अनुभूतियों का संस्पर्श नया है, पर इसमें जीवन का प्रवाह नहीं है। यह ठहरे हुए जीवन की कहानी है।

Scanned by CamScanner

तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफ़ाम

फणीश्वरनाथ रेणु

प्रेम का बहता संगीत

फणीश्वरनाथ रेणु अपने आप में लोक-संस्कृति के महान कथाकार हैं। उनका कथा संसार लोक-संस्कृति का संगीत है। लोक-भाषा उनकी कहानियों की नींव है। उनकी कहानियों में लोक-हृदय के मार्मिक प्रसंग अलग-अलग रंगों में फैले हुए हैं। लोक-गीतों और लोक-ध्वनियों के प्रयोग से उनकी कहानियों में सम्मोहन पैदा होता है जो पाठक को मदमस्त कर देता है और उसके पीठ में भी हिरामन की तरह गुदगुदी होने लगती है और वह मन ही मन कह बैठता है, हिस्स....ऐसा भी होता है.....ऐसे भी लोग होते हैं। पाठक रेणु की बहाई भावुकता की नदी में बह जाता है। इसमें डूबते उतराते उसे आनंद आता है।

'तीसरी कसम ' एक रोमांटिक कहानी है जिसमें हिरामन नामक एक गाड़ीवान के साधारण से जीवन में भूचाल आ जाता है। रेणु ने काले-कलूटे चालीस साला गाड़ीवान हिरामन के चरित्र को अमर बना दिया है। इसमें रेणु ने एक साधारण गाड़ीवान के हृदय की उमंगों और अकेलेपन की व्यथा को रागात्मक सौंदर्य से संपृक्त कर उसका मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है।

गाड़ीवान हिरामन देखने में चालीस साल का हट्टा-कट्टा, काला-कलूटा, देहाती नौजवान है जो अपने बैलों के सिवाय दुनिया की किसी और बात में दिलचस्पी नहीं रखता। बचपन में ही हिरामन की शादी हो गई थी। परंतु गौने से पहले ही उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई। हिरामन को अपनी पत्नी का चेहरा याद नहीं। कई कारणों से दूसरी शादी न हो सकी। अब हिरामन ने भी शादी न करने का

Scanned by CamScanner

मन बना लिया है। उसे डर है कि कहीं उसकी गाड़ीवानी न छूट जाए। वह सब कुछ छोड़ सकता है, गाड़ीवानी नहीं छोड़ सकता।

हिरामन सीधा-सादा और सच्चे मन वाला गाड़ीवान है। वह गाँव में अपने भाई-भाभी के साथ रहता है और गाड़ीवानी करता है। वह अपने भाई-भाभी के प्रति समर्पित है और उनकी आज्ञा उसके लिए सर्वोपरि है। हिरामन की निश्छलता मन मोह लेती है। जब हीराबाई उसे बताती है कि वह कानपुर की रहने वाली है तो वह हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाता है। यह जानने पर कि कानपुर ही नहीं 'नाकपुर' भी एक जगह का नाम है वह हँसते-हँसते दोहरा हो जाता है। हँसते-हँसते उसकी नजर हीराबाई की नाक की नकछवि पर पड़ती है और उसके मुँह से निकला 'लहू की बूंद'।

हिरामन ने अपने जीवन में तीन कसमें खाई थीं। पहली कि, अपनी बैलगाड़ी पर चोर-बाज़ारी का माल नहीं लादेगा और दूसरा कि बाँस नहीं लादेगा। 'तीसरी कसम' वह कहानी के अंत में खाता है कि किसी 'कंपनी' की औरत की लदनी नहीं करेगा। कहानी की शुरूआत पहली कसम के साथ होती है। कंट्रोल का जमाना है। हिरामन सीमेंट ले जा रहा है। फारबिसगंज का हर चोर-व्यापारी उसे पक्का गाड़ीवान मानता है। बड़ी गद्दी के बड़े सेठ भी उसके बैलों की बड़ाई करते हैं। पाँचवीं बार उसकी गाड़ी पकड़ी जाती है। परंतु इस बार दारोगा नर्म नहीं होता है और पाँच हज़ार की पेशकश करने के बाद भी जब मुनीम जी को गाड़ी से उतार लेता है तो हिरामन के मन में खटका हो जाता है। वह समझ जाता है कि इस बार निस्तार नहीं। जेल जाना ही पड़ेगा। हिरामन डरपोक नहीं है। उसे जेल जाने से डर नहीं लगता। पर उसे अपने बैलों का मोह है। न जाने कितने दिनों तक भूखे-प्यासे रहेंगे और फिर नीलाम हो जाएँगे। और तो और, वह भैया-भौजी के पास क्या मुँह लेकर जाएगा। वह चटपट फैसला कर लेता है। धीरे से बैलों की रस्सियाँ खोल देता है, और बैलों को गाड़ी से निकाल वहाँ से भाग लेता है। तीनो रात-भर भागते रहते हैं। घर पहुँच कर हिरामन तीन दिन तक बेसुध पड़ा रहता है और पहली कसम खाता है कि वह अब कभी भी चोरबाज़ारी का माल नहीं लादेगा।

दूसरी कसम का वाकया भी अत्यंत रोचक है। हिरामन की गाड़ी पर बाँस लदे थे। बाँस गाड़ी से चार हाथ आगे और चार हाथ पीछे की ओर निकले हुए थे। गाड़ी को संभालने में दिक्कत हो रही थी। एक तो गाड़ी बेकाबू थी और दूसरे गाड़ी शहर में चल रही थी। बाँस के आगे का हिस्सा पकड़ कर चल रहे नौकर का ध्यान भंग हुआ और मोड़ पर घोड़ागाड़ी से टक्कर हो गई। जब तक हिरामन बैलों की रस्सी खींचे, तब तक घोड़ागाड़ी की छतरी फट गई। घोड़ागाड़ी वाले ने तड़ातड़

Scanned by CamScanner

चाबुक मारते हुए गाली दी थी। तब उसने दूसरी कसम खाई थी कि बाँस की लदनी नहीं करेगा।

आज फिर हिरामन ने लदनी लादी है परंतु इस बार जनानी सवारी है। हिरामन सोचता है "औरत है या चम्पा का फूल! जब से गाड़ी में बैठी है, गाड़ी मह-मह महक रही है।"

हिरामन ने कभी नौटंकी-थिएटर या बाइस्कोप नहीं देखा (वैसे भी गाँवों में नौटंकी-थिएटर या बाइस्कोप देखने को बुरा मानते हैं)। उसने रेलगाड़ी देखी जरूर है पर चढ़ा नहीं है। ऐसे भोलेराम को सवारी के रूप में परी मिल जाती है। ऐसी परी जिसके गाड़ी में बैठते ही मानो रह-रहकर चम्पा का फूल खिल जाता है। उसे रह-रहकर पीठ में गुदगुदी लग रही है। पीठ में गुदगुदी लगने की कल्पना भी रोचक है। गुदगुदी पेट में लगती है परंतु पीठ में गुदगुदी लगना तो कुछ अनूठी ही बात है। हिरामन को कुछ समझ में नहीं आता है। बार-बार वह अपनी पीठ अंगोछे से झाड़ता है और मन ही मन भगवान से किसी अनिष्ट से रक्षा करने की प्रार्थना करता है।

जनानी सवारी हिरामन के लिए एक अचरज थी। उसने अपने जीवन में आज तक इतनी सुंदर औरत नहीं देखी थी जिसकी आवाज बच्चों जैसी महीन और फेनूगिलासी (ग्रामोफोन) जैसी सुरीली हो, जिसकी नाक पर जुगनू जगमगाता हो, जिसकी मुसकुराहट में खुशबू हो, जिसके दाँत छोटी-छोटी नन्हीं-नन्हीं कौड़ियों की पंक्ति के समान हों, जिसकी बोली में रस हो। उसे वह औरत साक्षात देवलोक से उतरी परी लगती है। कभी-कभी वह डर भी जाता है कि ' .....डाकिन-पिशाचिन तो नहीं? ' जब वह खाती है तो ऐसा लगता है "भगवती मैया भोग लगा रही हैं। लाल होठों पर गोरस का पारस।....पहाड़ी तोते को दूध-भात खाते देखा है?"

हिरामन हीराबाई के सम्मोहन में बंधता चला जाता है। जब हीराबाई साँस लेती है तो हिरामन के अंग-अंग में उमंग समा जाती है। उसके मन में 'सतरंगा छाता' (इन्द्रधनुष) खिलने लगता है। उसकी गाड़ी चम्पा के फूल से सुवासित होने लगती है। उसकी पीठ में खुजली होने लगती है। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास 'अनामदास का पोथा' में भी ऋषि रैक्व को ऐसी ही खुजली होती है। हिरामन को पीठ में गुदगुदी होती है और रैक्व को खुजली। क्या इसमें कोई साम्य है? मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इस प्रकार की प्रवृत्ति तीव्र अभिलाष भाव का प्रतीक है। हिरामन की पीठ में गुदगुदी लगना, चम्पा के फूल का महकना, सब कुछ रहस्यमय लगना इसी अभिलाष-भाव का प्रतिबिंबन है। इसे ही प्रेम, प्यार, इश्क या Love भी कहते हैं। कुछ कुछ होता है! हिरामन उसका रूप देखते ही अचंभित हो जाता है। हीराबाई के मुखड़े पर एक टुकड़ा चाँदनी पड़ने पर हिरामन को उसका

Scanned by CamScanner

चेहरा पहली बार दिखाई देता है; वह चीखते-चीखते रुक जाता है -- 'अरे बाप! ई त परी है!' हिरामन इस परी के मोहपाश में बुरी तरह जकड़ जाता है।

हीराबाई हिरामन को अपना मीता बना लेती है। दोनो के नाम में एक साम्य है - 'हीरा'। लेकिन हिरामन सोचता है कि बहुत फर्क है हिरामन और हीराबाई में। कहाँ वह 40 साल का काला-कलूटा देहाती जो बैलों के सिवाय दुनिया की किसी और बात में दिचलस्पी नहीं लेता और कहाँ फेनूगिलासी बोली वाली परी।

हिरामन को लगता है कि उसकी गाड़ी में कोई औरत नहीं देवकुल से उतरी देवी या परी है। इसीलिए हिरामन हीराबाई को दुनिया भर की नजरों से बचाकर रखना चाहता है। रास्ते में गुजरने वाले गाड़ीवानों को वह बताता है कि उसकी गाड़ी में दुल्हन बैठी है। उसका दिल यह मानता ही नहीं कि यह कम्पनी की औरत है। फिर सोचता है कि यह औरत नहीं युवती है। अभी कुमारी ही लगती है। उसे देखते ही हिरामन का कलेजा धड़क उठता है। हीराबाई उसे नचनिया नहीं बल्कि गाँव की बहू-बेटी जैसी लगती है।

हिरामन इस देवी के वापस देवकुल में जाने की आशंका से भयभीत है। उसे लगता है कि हीराबाई साक्षात इन्द्र का दरबार छोड़कर उसकी गाड़ी में बैठने वाली कोई अप्सरा है। नामलगर ड्यौढ़ी की लोककथा वस्तुतः हीरामन के ही मन की व्यथा है जिसमें परिवार में जन्मे देवता को कोई पहचान नहीं पाता। उसे यथोचित सम्मान न मिलने से वह रूठ कर वापस इन्द्रलोक चला जाता है और उसके बाद ड्योढ़ी की सारी शानो-शौकत विलुप्त हो जाती है। हिरामन को भी आशंका है कि उसका सुख चैन भी हीराबाई के साथ न चला जाए। यह आशंका भी हीराबाई के प्रति हिरामन के मन में उगे प्यार का प्रतीक है। वह इस नवोदित प्यार को सुरक्षित रखने के लिए बिदेशिया नाच का बन्दना गीत गाने लगता है - "जै मैया सरोसती, अरजी करत बानी; हमरा पर होखू सहाई हे मैया, हमरा पर होखू सहाई।"

तेगछिया में रुकने वाला प्रसंग अत्यंत मार्मिक है। इस छोटे से प्रसंग में कई दृश्य उकेरे गए हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि इसका एक-एक अनुच्छेद एक-एक दृश्य है। कजरी नदी के आसपास का पूरा परिवेश रोमांटिक है; और हो भी क्यों नहीं, हिरामन का मन भी तो प्रेम से स्निग्ध हो रहा है। प्रेमी प्रियतमा से ही नहीं उसकी हर चीज़ से प्रेम करने लगता है। इसीलिए हीराबाई के तकिए की खुशबू भी उसके देह में समा जाती है। उसकी सुगंध में इतना नशा है, जैसे वह एक साथ पाँच चिलम गाँजा फूँककर उठा हो। "हीराबाई के छोटे आईने में उसने अपना मुँह देखा। आँखें उसकी इतनी लाल क्यों हैं?"

Scanned by CamScanner

इसी प्रसंग में, आगे, हिरामन द्वारा गाँव से दही चूड़ा लाना, हीराबाई का साथ खाने का आग्रह और हिरामन के जी का जुड़ना पाठक को अंदर तक छू जाता है। पाठक की पीठ में भी गुदगुदी होने लगती है। हिरामन के मन में हीराबाई के लिए आकर्षण तो है ही, पर वह आकर्षण प्रेमी से ज्यादा भक्त का है, तभी तो "हिरामन ने देखा, भगवती मैया भोग लगा रही है। लाल होठों पर गोरस का पारस।....पहाड़ी तोते को कभी भात खाते देखा है।"

महुआ घटवारिन की दर्द भरी कथा भी हिरामन के अकेलेपन की पीड़ा को ही व्यंजित करती है। यह हिरामन का प्रिय गीत है। हीराबाई के बार-बार अनुरोध करने पर वह महुआ घटवारिन का गीत सुनाता है। "महुआ घटवारिन गाते समय उसके सामने सावन-भादों की नदी उमड़ने लगती है; अमावस्या की रात और घने बादलों में रह-रहकर बिजली चमक उठती है। उसी चमक में लहरों से लड़ती हुई बारी-कुमारी महुआ की झलक उसे मिल जाती है। सफरी मछली की चाल और तेज़ हो जाती है। उसको लगता है कि वह खुद सौदागर का नौकर है। महुआ कोई बात नहीं सुनती। परतीत नहीं करती, उलट कर देखती भी नहीं। और वह थक गया है तैरते-तैरते...."

हीराबाई को देखकर उसके मन में कहीं दूर आशा की किरण फूटती है। उसे लगता है कि इस बार महुआ ने अपने को पकड़ा दिया। उसने महुआ को छू लिया, पा लिया है। उसकी थकान दूर हो गई है। पन्द्रह-बीस साल से वह जिसकी खोज में था, वह उसे मिल गया है। उमड़ती हुई नदी की उलटी धारा में उसे किनारा मिल गया है।

महुआ घटवारिन की कहानी इस प्रकार है। महुआ की माँ बचपन में मर जाती है। उसका पिता दूसरी शादी कर लेता है। वह जुआरी-शराबी है। उसकी सौतेली माँ कर्कशा और निर्दयी है। जब महुआ बड़ी होती है तो वह उसे एक सौदागर को बेच देती है। जब सौदागर उसे नाव से ले जा रहा होता है तो वह उमड़ती नदी में कूद जाती है। सौदागर का एक नौकर महुआ को देखते ही मोहित हो जाता है। वह भी महुआ के पीछे-पीछे नदी में कूद जाता है। वह बार-बार महुआ को पुकारता है। महुआ तो घटवारिन की बेटी है। वह जल को मछली की तरह काट कर नदी की उलटी धारा में भी आगे निकलती जाती है। सौदागर का नौकर उसे पकड़ नहीं पाता। दोनो एक नहीं हो पाते।

महुआ घटवारिन की कथा प्रतीकात्मक है। इसके जरिए कथाकार ने हिरामन के मन की व्यथा को त्रासद भाव से भर दिया है। हिरामन अकेला है। हीराबाई ने उसे अपना मीता बनाया है। हिरामन के मन में चम्पा का फूल महक रहा है, उसकी पीठ में गुदगुदी हो रही है। उसकी थकान दूर हो रही है। उसका मन

Scanned by CamScanner

आनंद से परिपूर्ण हो रहा है। उससे आनंद के आँसू रोके नहीं रुकते। हीराबाई भी इस गीत को सुनकर कहीं खो जाती है। वह लंबी साँस लेती है जिससे हिरामन के अंग-अंग में उमंग समा जाती है। उसे हीराबाई में तेज नजर आता है और वह उसे हू-ब-हू महुआ घटवारिन लगती है। हिरामन की आँखें डबडबा जाती हैं। कथाकार ने हिरामन के मन में उठने वाले भावों को बड़े ही भीगे शब्दों में व्यक्त किया है -- "टप्पर में लगे लालटेन की रोशनी में छाया नाचती है आस-पास डबडबाई आँखों से, हर रोशनी सूरजमुखी फूल की तरह दिखाई पड़ती है।"

फारबिसगंज पहुँचते-पहुँचते हीराबाई हिरामन के मन में इस कदर समा जाती है कि वह उसे 'अपना' समझने लगता है। अब हीराबाई उसकी सवारी भर नहीं रह जाती। वह हीराबाई को अपनी गाड़ी में तिरपाल घेरकर वैसे ही रखता है जैसे एक बार अपनी भाभी को रखा था। वह सोचता है "आज रात-भर हिरामन की गाड़ी में रहेगी वह...हिरामन की गाड़ी में नहीं, घर में!" घर बसाने की हिरामन की यह 'महत्वाकांक्षा' उसके अकेलेपन की पीड़ा को ही व्यंजित करती है। वह हीराबाई को इतना 'आत्मीय' मानने लगता है कि उसके दिए पैसे नहीं लेता और बड़े अधिकार से बोलता है, "बेकार मेला-बाज़ार में हुज्जत मत कीजिए, पैसा रखिए।" ये शब्द किसी गाड़ीवान के नहीं है। यह तो रस में डूबा, प्रेम रस में पगा और दीवानगी की काल्पनिक दुनिया में डूबते-उतराते प्रेमी का वचन है।

मेले में हिरामन की यह रंग-बिरंगी दुनिया और भी खुशियों से भर जाती है। वह हीराबाई को 'अपना' मानने लगता है। उसपर अपना 'हक' जमाने लगता है। उसके शुष्क जीवन में बहार आ जाती है। उसका सारा व्यक्तित्व हीराबाई की सुगंध से भर जाता है। हीराबाई के एक बार हाथ रखने से उसकी गमछी, उसका कंधा सब धमधमा उठता है। परंतु जब हीराबाई की ओर से उसका आदमी किराए का पैसा देने लगता है तो वह सच्चाई से टकराता है। वह आहत होता है। वह किसी पतुरिया या कंपनी वाली की नहीं बल्कि अपनी 'लाली, लाली डोलिया में लाली रे दुल्हनिया' को लेकर आया था। अपनी 'दुल्हनिया' से किराया! अभी भी हिरामन सपनों की दुनिया में ही जी रहा है। वह उसके लिए दैव कुल से आई अप्सरा है। वह उसकी महुआ घटवारिन है।

थोड़ी देर तो हिरामन अपने महुआ घटवारिन से रूठा रहता है। परंतु अपने साथियों के अनुनय-विनय पर एलानिया पार्टी के एलान से उत्साहित होकर वह हीराबाई से मिलने जाता है। जब कंपनी का दरबान उसे अंदर जाने से रोकता है तो वह दरबान से कहती है - 'यह मेरा हिरामन है।' इसके बाद तो हिरामन सपनों की सीढ़ी पर चढ़ता चला जाता है। कंपनी का अठनिया पास उसके लिए अनमोल रतन सा है। वह अपनी सारी कमाई, जमा पूँजी हीराबाई के सुपुर्द कर देता है। हिरामन

Scanned by CamScanner

का सब मान-अभिमान मिट जाता है। कंपनी का नगाड़ा बजने के साथ-साथ "हिरामन के मन का पुरइन नगाड़े के ताल पर विकसित हो गया था।"

हिरामन के लिए हीराबाई किसी कंपनी की पतुरिया नहीं बल्कि सियाकुमारी है। इसलिए नौटंकी देखते समय जब एक दर्शक हीराबाई को हिरिया नाम से संबोधित करता है तो वह अपने साथियों से उस आदमी से बात न करने की हिदायत देता है, क्योंकि वह आदमी उसे लटपट लगता है। इसी प्रकार, नौटंकी देखते वक्त कुछ लोग उसके सपनों के महल को तोड़ने का प्रयास करते हैं तो वह अपने साथियों समेत टूट पड़ता है। पास बैठा एक आदमी कह बैठता है - 'बड़ी नेम वाली रंडी है।' इतना सुनते ही हिरामन और उसके साथी हीराबाई को 'रंडी' कहने वालों के साथ भिड़ जाते हैं। उनकी 'सिया सुकुमारी' को गाली देने वालों को वह कैसे छोड़ दे। इस मार-धाड़ के बीच हिरामन की आवाज गूँज रही है -- "आओ, एक-एक की गरदन उतार लेंगे।"

हिरामन को हीराबाई का नाचना-गाना अखरने लगता है। उसे सबके सामने नाचते देखे उसका दिल भारी हो जाता है। जब लोग उसे रंडी-पतुरिया कहते हैं तो उसका दिल कट कर रह जाता है। वह सोचता है कि आज जाकर वह हीराबाई से कहेगा कि वह नौटंकी कंपनी छोड़कर सरकस कंपनी में भर्ती हो जाए। नौटंकी कंपनी के रहने से लोग उसे बदनाम करते हैं। सरकस कंपनी में वह बाघ को नचाएगी। बाघ के पास जाने की हिम्मत कौन करेगा।

जब लालमोहर हिरामन से आकर कहता है कि हीराबाई चली गई और स्टेशन पर उसका इंतज़ार कर रही है तो उसके सपनों का महल ताश के पत्तों के समान भरभराकर गिर जाता है। हिरामन बदहवास सा उसके पास जाता है। हीराबाई उसकी अमानत (थैला) हिरामन को लौटा देती है और विदा लेती है। इस मौके पर हीराबाई भी विचलित हो जाती है। वह जाते-जाते कह जाती है, 'महुआ घटवारिन को सौदागर ने खरीद लिया गुरुजी।' यह कहते हीराबाई का गला भर आता है। हिरामन की हीराबाई उससे दूर चली जाती है। अंततः वह तीसरी कसम खाता है - 'कंपनी के औरत की लदनी...'

'तीसरी कसम' झरने की तरह बहती प्रेम कहानी है। यह किसी धीरोदात्त नायक या राजकुमार की प्रेमकथा नहीं है बल्कि एक चालीस वर्षीय सीधे-सादे गाड़ीवान की उमंगों के प्रस्फुटन की मार्मिक कहानी है। रेणु की लेखनी ने एक साधारण से व्यक्तित्व में असाधारण का समावेश कर दिया है। प्रेम की धारा में बहता हिरामन किसी राजकुमार से कम नहीं लगता।

'तीसरी कसम' एक अकेले आदमी की कसक है। बचपन में ही पत्नी को खो देना और फिर विवाह न हो पाना उसके लिए कष्टप्रद है। ऊपर ही ऊपर तो वह

Scanned by CamScanner

विवाह नहीं करना चाहता परंतु अंदर ही अंदर लावा बह रहा है जो हीराबाई के संपर्क में आते ही फूट पड़ता है। अपने ही ज्वालामुखी से वह खुद भस्म हो जाता है। थोड़े दिन की खुशी फिर वही अकेलापन। हीराबाई उसे और कुछ तो नहीं पर प्रेम की टीस तो अवश्य दे जाती है। तभी तो वह कहानी के अंत में अपने दर्द का इज़हार 'मारे गए गुलफाम' गीत गाकर करता है।

कहानी का पूरा परिवेश लोकमय है। लोक-संस्कृति से सम्पृक्त यह कथा बहते संगीत के समान प्रतीत होती है। इसमें चित्रों को जोड़-जोड़कर कहानी बनाई गई है। इसकी इसी दृश्यात्मक क्षमता को देखकर फिल्म भी बनी जिसमें राजकपूर ने हिरामन की भूमिका निभाई है।

इस कहानी की कसक को तीव्र करने के लिए रेणु ने दो लोक-कथाओं का भी समावेश किया है। नगर हवेली की कथा और महुआ घटवारिन की कथा ने शिल्प के साथ-साथ कथ्य को भी जीवंत और सरस बना दिया है। लोक-जीवन की सरसता, सादगी और निश्छलता पूरी कहानी में झलकती है। हिरामन और उसके साथियों का हीराबाई के साथ आचरण और श्रद्धा-भाव इसी सादगी का प्रमाण है। यह कहानी ग्रामीण मन की सहज अभिव्यक्ति है। नौटंकी का 'पास' पाकर उनका इतराना, हीराबाई को रंडी बोलने पर सबको पीट देना, गाँव घर जाकर नौटंकी देखने की बात न कहना, ग्रामीण मनोविज्ञान का ही दिग्दर्शन है।

कहानी कहने का ढंग बेजोड़ है। रेणु ने एक सामान्य-सी लगने वाली कथा को अपने कथा शिल्प के जोर से हिंदी कहानी का एक अनमोल रत्न बना दिया है। कहानी में जासूसी उपन्यास-सा रोमांच और प्रेम कथा सी रुमानियत है। हिरामन का चुपके से बैलों को खोलकर भगाने और भागने का वर्णन क्या किसी जासूसी उपन्यास से कम है। इसे पढ़ते वक्त रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि कहीं हिरामन पकड़ा न जाए। कहानी नाटकीय संभावनाओं से भरपूर है। आरंभ से ही कहानी पाठक के मन में उत्सुकता भर देती है। हिरामन को पीठ में गुदगुदी क्यों लग रही है, इसका रहस्य काफी देर बाद खुलता है। वर्तमान और अतीत के झूले में झूलता पाठक कहानी से चिपक जाता है। कहानी की भाषा इतनी जीवंत है कि पाठक उसपर फिसलता चला जाता है। लोकगीतों का प्रयोग कहानी के कथ्य को प्रस्फुटित करने में मदद करता है। सारे गीत व्यंजना से भरपूर हैं जो हिरामन के दर्द को अलग-अलग रूपों में अभिव्यक्त करते हैं।

'तीसरी कसम' एक 'क्लासिकल' कहानी है। इसकी संवेदना शाश्वत है और शिल्प सर्वथा मौलिक है।

Scanned by CamScanner

चीफ की दावत : भीष्म साहनी

मानवीय संबंधों की बलि

अंतर्विरोध, द्वंद्व और विडंबना भीष्म साहनी की कहानियों के प्रमुख आधार-स्तंभ हैं। कहानी की सार्थकता जीवन की छोटी-सी छोटी घटना में जीवन के व्यापक यथार्थ की खोज और अभिव्यक्ति में निहित है। कहानी में व्यक्त आधे-अधूरे अंतर्विरोध की व्यंजना किस बड़े अंतर्विरोध की ओर होती है। इसी से कथा में नाटकीय मोड़ भी पैदा होता है, कथा रस भी प्रभावित होता है और यथार्थ को नया स्वर और रूप मिलता है।

इस लिहाज से 'चीफ की दावत ' एक सफल कहानी है। कहानी के आरंभ में ही संकट बिंदु उपस्थित कर दिया गया है और अंत तक यह 'संकट' कभी वरदान तो कभी अभिशाप की भूमिका निभाता रहता है। शामनाथ किसी दफ्तर में अफसर हैं। उन्होंने अपने चीफ को दावत पर बुलाया है। शामनाथ और उनकी पत्नी तैयारी में हाल-बेहाल हैं। घर को सजाया जा रहा है। घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे छिपाया जा रहा है। अचानक शामनाथ की नजर माँ पर पड़ती है। उनका कलेजा ही बैठ जाता है। इस माँ का क्या करें। इसे कहाँ रखें, कहाँ छिपाएँ। वे माँ को घर में रखना नहीं चाहते क्योंकि यदि चीफ ने देख लिया तो क्या सोचेगा। शामनाथ की पत्नी माँ को उनकी सहेली के यहाँ भेजने का प्रस्ताव करती हैं। परंतु शामनाथ को यह प्रस्ताव पसंद नहीं आता है क्योंकि उन्होंने बड़ी मुश्किल से उस बुढ़िया को घर में आने से रोका है । फिर पति-पत्नी में सलाह होती है कि माँ खाना पीना खाकर जल्द ही अपने कमरे में चली जाएँ। मगर पत्नी को तुरंत याद आता है यदि माँ सो गईं तो खर्राटे लेंगी। माँ के कमरे से बरामदा सटा है जहाँ

Scanned by CamScanner

मेहमान खाना खाएँगे। यदि माँ सो जाएँगी तो उनका खर्राटा बजेगा और इससे कितनी बेइज्जती हो जाएगी।

घर के बुजुर्गों के प्रति यह सोच कितना घटिया और गलीज़ है, यह कहने की ज़रूरत नहीं। माँ जिसने जन्म दिया है, स्नेह दिया है, बच्चे का भविष्य बनाने में अपना तन, मन, धन अर्पण कर दिया है, वही माँ आज फालतू सामान हो गई। यह घटिया लोगों की, घटिया मानसिकता का परिचायक है।

घर के बुजुर्गों के प्रति असम्मान का भाव आधुनिकता और एकल परिवार का परिणाम मान लिया जाता है। परंतु यह कौन-सी आधुनिकता है जिसमें हम अपनी जननी का ही तिरस्कार कर दें। यह तो क्षुद्र स्वार्थ है और इसी क्षुद्र स्वार्थ को इस कहानी में अंकित किया गया है।

माँ सुबह से ही ईश्वर से यह मना रही है कि बेटे के बड़े साहब आने वाले हैं सब कुछ कुशलमंगल बीत जाए । बेटा माँ को कैसे रहना है, कहाँ रहना है, कैसे बैठना है, आदि निर्देश देने लगता है। वह अपनी माँ को आदेश देता है कि जब मेहमान बैठक में होंगे तुम बरामदे में बैठना फिर गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना। माँ बेटे का यह आदेश सुनकर अवाक् रह जाती है। धीरे से बोलती है - अच्छा बेटा। इसके बाद बेटा शर्मिंदगी की हद पार करके माँ को आदेश देता है - "और माँ, आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे खर्राटों की आवाज दूर तक जाती है।" यह सुनकर माँ को अपने होने पर ही शर्मिंदगी महसूस होने लगती है।

आधुनिकता की आड़ में व्यक्ति अपने स्वार्थों की पूर्ति कर रहा है। माँ को सामान की तरह इधर-उधर छिपाना आधुनिकता या फैशन का तकाजा नहीं है बल्कि अपने व्यक्तित्व की खामी और कमी को छिपाने का प्रयास है। आधुनिकता के नाम पर जो खोखले पैमाने हमने बना लिए हैं उसका अंजाम यही होना है। आधुनिकता व्यक्ति में खुली दृष्टि और वैज्ञानिक सोच विकसित करती है। इसमें माता-पिता के तिरस्कार की बात कहाँ से आती है!

'चीफ की दावत' छद्म आधुनिकता के ट्रैजिक तनाव से बुनी कहानी है। इसमें एक प्रकार की क्रूरता है जो बेगानेपन का भाव पैदा करती है। कहानी में तनाव शनैः शनैः बढ़ता चला जाता है। शामनाथ जो हर बात में तरतीब चाहते हैं, अपनी माँ को ठीक-ठाक कपड़े पहनवाकर कुर्सी पर बिठा देते हैं मानो घर की किसी बदसूरत चीज़ को लीप-पोतकर खूबसूरत बना दिया गया हो। इतना सब कुछ करने के बाद भी शामनाथ जी को चैन नहीं है। शामनाथ अपनी माँ को इतना डरा देते हैं कि वे भी अपने को फालतू सामान समझ बैठती हैं। उनका बेटा उनसे जो-जो करने को कहता वे वैसे-वैसे ही उसकी आज्ञा का पालन करती जाती हैं। अगर माँ कुछ बोलती हैं तो शामनाथ चिढ़ जाते हैं। उन्हें लगता है कि माँ उन्हें उनकी

Scanned by CamScanner

असलियत दिखा रही हैं। माँ एक ऐसा आइना है जिसका सामना शामनाथ नहीं करना चाहते। जब वह माँ से गहने-जेवर पहनने को कहता है, और माँ जवाब देती है कि बेटा, गहने तो तुम्हें पढ़ाने-लिखाने में बिक गए तो शामनाथ तिलमिला उठता है। वह खीज कर कहता है -- "जितना दिया था उससे दुगना ले लेना।" माँ इससे आहत होती है, "मेरी जीभ जल जाए, बेटा, तुमसे जेवर लूँगी। मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया। जो होते, तो लाख बार पहनती।" शामनाथ माँ को जितनी हिदायतें देता है उसका टुच्चापन उतना ही उजागर होता जाता है।

साहब आ गए। पार्टी रंगीन होने लगी। खाने का वक्त हुआ। सबको लेकर शामनाथ बरामदे की ओर चले। बरामदे में पहुँचते ही उनके होश गुम हो गए। उनका सारा नशा हिरन हो गया। "बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों की त्यों बैठी थीं मगर दोनो पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए, और सिर दायें से बायें, और बायें से दायें झूल रहा था और मुँह से लगातार गहरे खर्राटे की आवाज आ रही थी। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते। और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दायें से बायें झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झड़े हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।"

यह दृश्य देखते ही शामनाथ के गुस्से का ठिकाना न रहा। अचानक माँ की नींद टूटी और सब लोगों को सामने देखकर हक्का-बक्का रह गईं। लेकिन चीफ के व्यवहार ने सारा नज़ारा ही बदल दिया। चीफ ने उनसे हाथ मिलाया। उनसे गाने की फरमाइश की और बेटे के आदेशानुसार उन्हें एक पुराना टूटा-फूटा सा गीत भी सुनाना पड़ा। चीफ ने माँ की खूब प्रशंसा की। अब तो शामनाथ भी माँ की तारीफों के पुल बाँधने लगे। माँ की कढ़ाई की हुई फुलकारी दिखाई और चीफ साहब से वादा किया कि वे उनके लिए बढ़िया-सी फुलकारी माँ से बनवाएँगे। माँ गुमसुम सी यह सब तमाशा देखती रही। रह-रहकर उन्होंने प्रतिरोध भी किया पर बेटे के सामने उनकी एक न चली। माँ के प्रतिरोध पर शामनाथ झल्लाते रहे और बेटे के डर से माँ पुतली की तरह नाचती-डोलती रहीं। पार्टी खत्म हो गई। मेहमान चले गए। लौटकर शामनाथ ने माँ को गले लगा लिया। "ओ मम्मी! तुमने तो आज रंग ला दिया!...साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ!"

अब तक माँ पूरी तरह आहत हो चुकी थीं। उनके बेटे ने उन्हें जितना जलील करना था कर लिया था और अब वह जले पर नमक छिड़क रहा है। माँ की आत्मा छलनी-छलनी हो चुकी थी। बेटे ने माँ की अंतरात्मा को कुचल दिया था। उन्होंने घायल मन से आँसू भरी याचना की कि उन्हें हरिद्वार पहुँचा दिया जाए। पर अभी शामनाथ ने प्रेमिका को माँ का दिल निकल कर कहाँ दिया था? उसे तो

Scanned by CamScanner

अभी अपनी माँ का दिल निकालना था। (आपने बचपन में कहानी पढ़ी होगी कि एक प्रेमिका ने अपने प्रेमी से कहा कि तुम अपनी माँ का दिल निकाल कर लाओ तब मैं तुमसे शादी करूँगी। प्रेम में मतांध युवक ने अपनी माँ को मारकर उसका दिल निकाल लिया। जब वह माँ का दिल लेकर जा रहा था तो उसे ठोकर लगी। माँ के दिल ने पूछा - 'बेटा चोट तो नहीं आई।' बेटा कटकर रह गया। वह अपनी गलती पर पश्चाताप करने लगा। पर अब पछ्ताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।) शामनाथ बिफर पड़े। बोले, "तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो, माँ? तुम जान-बूझकर हरिद्वार जा बैठ जाना चाहती हो, ताकि दुनिया कहे कि बेटा माँ को अपने पास नहीं रख सकता।" तुरंत शामनाथ असल बात पर आ जाते हैं, "तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा।" इसपर भी माँ नहीं मानतीं तो वह तुरुप का पत्ता फेंकता है। माँ की भावनाओं से खेलते हुए कहता है कि यदि फुलकारी बना दोगी तो साहब मेरी तरक्की कर देंगे। यह सुनते ही कि फुलकारी बनाने से बेटे की तरक्की हो जाएगी माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उनका झुर्रियों भरा मुँह खिलने लगा, आँखों में हल्की-हल्की चमक आने लगी और वे फुलकारी बनाने को तैयार हो गईं तथा मन ही मन बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करने लगी। बेटा भले ही अपनी माँ का दिल निकाल ले पर वह अपने बेटे का शुभ ही सोचेगी। बेटे को ठोकर लगने पर वह यहाँ पूछेगी 'बेटे, चोट लगी क्या?'

कहानी ज्ञान-कोष नहीं, बल्कि संबंधों का अनुभव है और चरित्र कहानीकार के अनुभव का प्रतिबिंब है। कहानीकार कहानी के पात्रों के द्वारा अपने ही अनुभवों का ही उद्घाटन करता है। भीष्म साहनी ने अपनी इस कहानी में एक प्रसंग निर्मित कर ह्रास होते सामाजिक मूल्यों पर तीखा प्रहार किया है। कहानी मानवीय संबंधों में आई दरार को भी उद्घाटित करती है। केवल उद्घाटित ही नहीं करती बल्कि उसकी आलोचना करती है, उसपर व्यंग्य करती है और उसपर प्रहार भी करती है। आज आधुनिकता के नाम पर जिस प्रकार रिश्तों की बलि चढ़ाई जा रही है उसका बेलौस और मार्मिक चित्रण भीष्म जी ने किया है।

इस कहानी में बार-बार मानवीय मूल्यों को बलि चढ़ते दिखाया गया है। जिस समाज में माँ को फालतू सामान की तरह कभी छिपाया तो कभी जरूरत पड़ने पर नुमाइश की चीज़ बनाया जाता हो, जहाँ बेटा अपनी माँ का दिल दुखाने में पल-भर के लिए न हिचकिचाता हो, उस समाज, परिवार और व्यक्ति का नाश निश्चित है। कहानी के अंत में शामनाथ के लड़खड़ाते हुए माँ के कमरे से निकलना उनके नाश का ही सूचक है।

छोटे से प्रसंग, छोटी-सी बात, क्षणिक अनुभव को उद्घाटित कर बड़ी बात कह जाना कहानी की विशेषता रही है। 'चीफ की दावत' में 'माँ' को समस्या

Scanned by CamScanner

के रूप में पेश कर कहानीकार ने आधुनिक जीवन की विषमता, विसंगति और विफलता का जीवंत रूप प्रस्तुत कर दिया है। निश्चित रूप से इसके लिए कहानीकार ने मेलोड्रैमेटिक या अतिनाटकीयता का अंदाज़ अपनाया है परंतु कहानी में तीव्रता लाने और समस्या को तल्ख रूप में उभारने और व्यंग्य करने के लिए यह आवश्यक था। क्या विडम्बना है कि शामनाथ जिस चीज़ को जितना छिपाना चाहता है वह अपने 'वीभत्स' रूप में सबके सामने आ जाती है। और जिसे वह वीभत्स समझ रहा था वह उनके काम आ जाती है। प्रसंग निर्माण की यही क्षमता, द्वंद्व अंतर्विरोध और विडंबना, इन्हें कहानी में पिरोने का गुर किसी कहानी और कहानीकार को महान बनाता है। 'चीफ की दावत' इन्हीं गुणों के कारण हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है।

Scanned by CamScanner

यही सच है : मन्नू भंडारी
संबंधों का सच

'यही सच है' में संबंधों का सच उद्घाटित हुआ है। इसमें एक युवती के दो स्थितियों के बीच के द्वंद्व की कहानी कही गई है। जब वह अतीत से टकराती है तो उसे लगता है 'यही सच है।' वर्तमान के सच को वह भूल जाती है। पुनः जब वर्तमान उसके सामने आता है तो उसे लगता है यही सच है बाकी सारे संबंध झूठे हैं। उसके सामने दुविधा है कि वह किसे अपनाए; निशीथ को या संजय को। निशीथ अतीत है और संजय वर्तमान। दीपा वर्तमान को सच मानती है, अतीत को वह लगभग अपने मस्तिष्क से निकाल चुकी है। परंतु जब उसका अतीत उसके सामने आता है तो वह गड़बड़ा जाती है। उसे लगता है कि उसे तो अतीत ही प्रिय है क्योंकि इस अतीत के साथ कुछ स्मृतियाँ हैं, कुछ पल हैं। निर्मल वर्मा की कहानी 'परिन्दे' की लतिका को भी अपना अतीत बहुत प्रिय है। दोनो ही कहानियों में अतीत के प्रति सम्मोहन तो दिखाया गया है परंतु वर्तमान के रू-ब-रू अतीत को व्यतीत मान झटक दिया गया है। 'परिन्दे' में यह झटकाव बहुत सूक्ष्म है और 'यही सच है' में मूर्त और स्पष्ट। इसके साथ ही, 'परिन्दे' की लतिका व्यतीत की रक्षा के लिए सतर्क और और सचेष्ट है जबकि 'यही सच है' की लतिका अतीत से रू-ब-रू होकर उधर लौटना तो चाहती है पर कुनमुनाकर रह जाती है और वर्तमान के सामने आते ही अतीत भरभराकर गिर जाता है।

इस कहानी के जरिए दीपा नामक एक युवती की मानसिक उलझन का चित्रण किया गया है। निशीथ और दीपा एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। लेकिन किसी अपरिहार्य कारण से वे एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। दीपा के अनुसार निशीथ उसे छोड़ देता है। इसलिए उसके मन में निशीथ के प्रति घृणा का भाव है। वह

Scanned by CamScanner

उससे नफरत करती है। इसी बीच, दीपा के पिता की मृत्यु हो जाती है। कहानी की व्यंजना को पकड़ें तो घर में केवल भाई और भाभी रह जाती हैं। माँ का देहांत पहले ही हो चुका है। भाई और भाभी दीपा को अपने पास नहीं रखते। दीपा कानपुर चली जाती है। वहाँ उसकी मुलाकात संजय से होती है। बुरी तरह से टूटी दीपा को वह सहारा देता है और संजय-दीपा एक-दूसरे को प्यार करने लगते हैं। यह कहानी का नेपथ्य है। कहानी में ये प्रसंग वर्णित नहीं हैं। केवल कहीं-कहीं सूचना दी गई है। हालांकि इस कहानी में जीवन के जिस सच को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है उसमें इनकी अहमियत नहीं है। जगह पटना हो या कानपुर, निशीथ कलकत्ते में रहता हो या मुंबई में क्या फर्क पड़ता है। हाँ, कहानी की विश्वसनीयता बनाने में बेशक इनकी भूमिका हो सकती है।

'नई कहानी' की संरचना के अनुरूप ही कहानी अनायास शुरू होती है। इसमें दीपा अपनी कहानी खुद लिख रही है। लेखिका मन्नू भण्डारी नेपथ्य में हैं। कहानी को विश्वसनीय बनाने का यह एक और हथकंडा है, जिसे 'नई कहानी' के कहानीकारों ने खूब अपनाया और आजमाया है। आज भी कहानी लिखने का यह तरीका खूब प्रचलित है।

कहानी डायरी शैली में लिखी गई है। हालांकि इसे शुद्ध डायरी शैली नहीं कह सकते क्योंकि इसमें जगह का नाम तो है पर तिथि और दिन अंकित नहीं है। स्थान का नामोल्लेख भी विश्वसनीयता निर्माण के लिए किया गया है।

कहानी के आरंभ में 'मैं' किसी संजय का इंतज़ार कर रही है। संजय आता है। दोनो में मान-मनौवल होता है। बातों ही बातों में पता चलता है कि वे प्रेमी-प्रेमिका हैं और जल्द ही शादी करने वाले हैं। प्रेमिका का नाम दीपा है। दीपा के जरिए या अवलोकन बिंदु से यह कहानी पाठक के सामने आती है। बातों ही बातों में दीपा संजय को बताती है कि उसकी मित्र इरा ने उसे खबर दी है कि जल्द ही कलकत्ता से नौकरी के इंटरव्यू का बुलावा आने वाला है। वे दोनो कलकत्ता जाकर अपनी गृहस्थी बसाने के सपने देखने लगते हैं। इसी बीच, संजय निशीथ की बात छेड़ देता है। निशीथ दीपा का पहला प्रेमी और पहला प्यार था। निशीथ भी कलकत्ता में रहता है। जिस ओर से दीपा ने आँखें मूँद ली हैं, संजय जब उसे उसी ओर धकेलने का प्रयास करता है तो वह भभक पड़ती है। इसी समय पता चलता है कि संजय से प्यार करने से पहले दीपा निशीथ नामक किसी व्यक्ति से प्यार करती थी। परंतु अब वह पूरी तरह संजय को समर्पित है। संजय भी उसे बेहद प्यार करता है।

घर आने पर दीपा का विचार-मंथन शुरू होता है। संजय द्वारा निशीथ का जिक्र करने से वह व्याकुल है। वह समझती है कि संजय का मन निशीथ को लेकर

Scanned by CamScanner

जब-तब सशंकित हो उठता है, पर वह तो निशीथ से नफरत करती है। उसके स्मरण मात्र से मन घृणा से भर उठता है। फिर अठारह वर्ष की आयु में किया प्यार तो बचपना होता है, कोरी भावुकता। "उसमें आवेश रहता है पर स्थायित्व नहीं; गति रहती है पर गहराई नहीं। जिस वेग से वह आरंभ होता है, जरा-सा झटका लगने पर उसी वेग से टूट भी जाता है।" परिपक्व होने पर वह सब कुछ बेवकूफी लगती है, व्यक्ति को अपने आप पर हँसी आती है।

अपने इसी विचारक्रम के दौरान दीपा सोचती है कि अब संजय ही उसके प्यार का, कोमल भावनाओं का, भविष्य का केंद्र-बिंदु है। संजय-दीपा का प्यार परिपक्व व्यक्तियों का प्यार है जिसमें भावुकता का स्थान परिपक्वता ने और सपने का स्थान यथार्थ ने ले लिया है। इसलिए यह प्यार अधिक गहरा है, अधिक स्थाई है।

वह सोचती जाती है। वह मन ही मन खुद से बात करती है। वह सोचती है कि संजय को कैसे समझाए कि वह निशीथ से घृणा करती है। निशीथ ने उसका अपमान किया था जिसकी कचोट से वह आज भी तिलमिला जाती है। संबंध तोड़ने से पहले उसने कारण बताने की ज़रूरत तक नहीं समझी। उसे अकेले सारी दुनिया की भर्त्सना, तिरस्कार, परिहास और दया का विष पीना पड़ा। इसके बावजूद वह ज़िंदा है तो बस संजय की वजह से, जिसने बड़े ही नाज़ुक समय में उसे संभाल लिया। इसी कारण वह संजय से बहुत प्यार करती है। निशीथ का प्यार तो छल था, भ्रम था, झूठ था; संजय का प्यार सच है। यही सच है।

दीपा कलकत्ता पहुँचती है। कलकत्ता में उसका अतीत ठीक उसके सामने आकर खड़ा हो जाता है। अचानक वहाँ निशीथ से मुलाकात हो जाती है। वह निशीथ का सामना नहीं करना चाहती पर उसके नमस्कार के जवाब में नमस्कार तो करना ही पड़ता है। निशीथ को न देखने की लाख कोशिश करने के बावजूद उसकी नजर निशीथ के चेहरे पर टिक जाती है। उसे निशीथ का कवियों की तरह बाल बढ़ा लेना, स्याह रंग हो जाना, दुबला जाना कुछ अच्छा नहीं लगता। उसके न चाहने पर भी अतीत आँखों के सामने खुल जाता है। वह सोचती है "कितना दुबला हो गया निशीथ। ...... लगता है, जैसे मन में कहीं कोई गहरी पीड़ा छिपाए बैठा है। मुझसे अलग होने का दुःख तो नहीं साल रहा इसे।"

दीपा का मन डोलने लगता है। वह लड़खड़ाने लगती है। जैसे ही उसकी कल्पना उसे निशीथ के पास ले जाने लगती है वैसे ही वास्तविकता उस कल्पना को खंडित कर डालती है। उसे याद आता है कि इसी व्यक्ति ने उसे दुनिया में ठोकरें खाने के लिए छोड़ दिया था। वह सोचती है कि उसने पहचानने से इन्कार क्यों नहीं कर दिया।

Scanned by CamScanner

असल में, दीपा के मन मे अभी भी निशीथ के प्रति आकर्षण है। पहला प्यार भुलाना कितना मुश्किल है, इसका निशीथ का सामना होने पर ही उसे पता चलता है। वह निशीथ से जितनी दूर जाने का प्रयत्न करती है निशीथ उतना ही उसके दिलो-दिमाग पर छाने लगता है। वही बार-बार अपने वर्तमान का आलंबन लेना चाहती है पर अतीत उसे अपनी ओर बहा कर ले जाता है। वह वर्तमान के साथ ही रहना चाहती है पर अतीत के बहाव में अपने को रोक नहीं पाती। वह न चाहकर भी संजय से निशीथ की तुलना करने लगती है। संजय के मुकाबले निशीथ उसे समय का पाबंद, जिम्मेवार और गंभीर लगने लगता है। वह निशीथ के अपनत्व भरे व्यवहार को नकारने की हिम्मत नहीं जुटा पाती। वह कई बार चाहती है कि निशीथ को संजय की बात बता दे, पर हिम्मत नहीं होती।

धीरे-धीरे निशीथ उसे प्यारा लगने लगता है। "ढलते सूरज की धूप निशीथ के बायें गाल पर पड़ रही थी, और सामने बैठा निशीथ इतने दिन बाद एक बार फिर मुझे बड़ा प्यारा-सा लगा।" वह निशीथ की मनपसंद रंग की साड़ी पहनती है, बड़े चाव और सतर्कता से प्रसाधन करती है। बार-बार अपने आपको टोकती भी है। पर उसका मन बेबस है। निशीथ जब उसके सौंदर्य की प्रशंसा करता है तो उसे पुलकमय सिहरन होती है। वह तुरंत संजय से तुलना करती है कि संजय तो कभी उसके कपड़ों की तारीफ नहीं करता, जबकि उसे पूरा अधिकार है। संजय के मुँह से प्रशंसा के दो बोल सुनने को उसका मन तरसता है। वह निशीथ के साथ घूमती है और वह धीरे-धीरे निशीथ को संजय का स्थान लेने की छूट देने लगती है। वह बार-बार निशीथ में संजय को देखना चाहती है परंतु संजय का चेहरा तुरंत गायब हो जाता है। सामने निशीथ रह जाता है; उसका पहला प्यार। उसे लगता है कि निशीथ कुछ कहना चाहता है। असल में वह चाहती है कि निशीथ कुछ कहे। पर वह कुछ नहीं कहता।

धीरे-धीरे निशीथ दीपा की साँसों में, उसकी रग-रग में समा जाता है। वह उससे प्यार के दो बोल सुनने को लालायित हो जाती है। निशीथ के सामने वह अपने को बिलकुल असहाय पाती है। वह एक कमजोर लड़की-सी भावना में बह जाती है और चाहती है कि निशीथ कह दे कि वह उससे आज भी उतना ही प्यार करता है जितना पहले किया करता था। निशीथ की आत्मीयता में उसे अपने लिए प्यार ही प्यार छलकता प्रतीत होता है। अंत में गाड़ी छूटते समय जब निशीथ उसका हाथ दबाता है तो वह पूरी तरह भावुकता में बह जाती है - "विश्वास करो यदि तुम मेरे हो तो मैं भी तुम्हारी हूँ; केवल तुम्हारी, एकमात्र तुम्हारी।....मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, बाकी सब झूठ, अपने को भूलने का, भरमाने का, छलने का असफल प्रयास है!"

Scanned by CamScanner

दीपा के जीवन में निशीथ के दुबारा हस्तक्षेप से दीपा की नैया बिल्कुल डगमगा जाती है। उसे अपने प्यार पर ही संदेह होने लगता है। उसे लगता है कि संजय से उसने प्यार नहीं किया बल्कि कृतज्ञता अर्पित की है। इस समय उसे लगने लगता है कि "प्रथम प्रेम ही सच्चा प्रेम होता है, बाद में किया हुआ प्रेम तो अपने को भूलने का, भरमाने का प्रयास-मात्र होता है..."

फिर प्रतीक्षा। इस बार संजय के आने की और निशीथ के पत्र की। वह यह भी जानती है कि 'दोनो में से कोई भी नहीं आएगा।' यहाँ भी 'परिन्दे' के समान दीपा प्रतीक्षारत है। न संजय आता है और न निशीथ का पत्र। इरा उसे नियुक्ति की खबर भेजती है। इतनी बड़ी खुशखबरी पाकर भी दीपा खुश नहीं हो पाती क्योंकि खबर निशीथ ने नहीं भेजी थी। कभी-कभी उसे लगता है कि निशीथ के बारे में उसका सोचना भ्रम है, कल्पना है, अनुमान है। परंतु जिस स्पर्श ने उसके तन-मन को डुबो दिया उसे धोखा कैसे मान ले। आत्मीयता के अनकहे क्षणों को वह कैसे झुठला सकती है? संजय की दी हुई घंटी की टन-टन दीपा के 'निशीथ सोच' को भंग करती है। चारो ओर संजय ही संजय है। बड़ी विचित्र स्थिति है दीपा की। उसके सपने में निशीथ आता है, आँख खोलती है तो सामने संजय को पाती है। संजय के साक्षात सामने आने से उसकी खोयी चेतना वापस लौटती है और वह विक्षिप्त-सी संजय से लिपट जाती है। दीपा को लगता है कि "यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था..."

दीपा भावुक होने के साथ-साथ संवेदनशील भी है। इसीलिए जब निशीथ पुनः उसके करीब आना चाहता है तो वह चाहकर भी उसे नहीं रोक पाती। वह दिल से चाहने लगती है कि निशीथ उसके पास आए। फिर संजय के सामने होते ही उसे लगता है कि निशीथ भ्रम है, संजय सत्य है। इस कहानी में संज़य, दीपा और निशीथ का सीधी रेखा समान संबंध विकसित हुआ है। बीच में दीपा खड़ी है, आजू-बाजू संजय और निशीथ खड़े हैं। निशीथ उसका अतीत है और उसे वह याद नहीं रखना चाहती। परंतु अतीत के आते ही वह पिघल जाती है और आत्म-सर्मपण कर देती है। उसे इसके लिए आत्मसंघर्ष के दौर से गुज़रना पड़ता है।

'यही सच है' दीपा का भ्रम है। दीपा का ही क्यों, कोई भी व्यक्ति जो यह सोचता है कि जो कुछ उसके सामने है वही सच है तो यह उसका भ्रम है। समय, स्थिति, स्थान और कई अन्य कारकों के फलस्वरूप सच का चेहरा बदलता रहता है। इसी को समझ न पाने के कारण दीपा के मन में दुविधा है। असल में अपनी-अपनी जगह दोनो सच हैं। एक अतीत का सच है और एक वर्तमान का। जब वह अतीत के सच को पकड़ने का प्रयत्न करती है तो वर्तमान की बागडोर छूटने लगती है। अंततः वह वर्तमान के सच को ही सच मानकर उसका आलिंगन करती है।

Scanned by CamScanner

दीपा जिस प्रकार निशीथ और संजय के बीच अपने को बँटा पाती है उसे परंपरागत पुरुष समाज 'चारित्रिक स्खलन' का नाम भी दे सकता है। परंतु यह एक सुलझी, सुसंस्कृत और सुसभ्य युवती के बँटे मन का चित्रण है। मनुष्य के इस स्वाभाविक गुण को लेखिका ने बड़े ही बेबाक ढंग से चित्रित किया है। दीपा के ढुलमुलपन और दुर्बलता को छिपाने की कोशिश नहीं की गई है। लेखिका ने उसके मन की दुविधा, दुर्बलता और संघर्ष को बिल्कुल खुले रूप में पाठकों के समक्ष परोस दिया है। स्त्री मन के भावों को उन्मुक्त रूप में व्यक्त करने का यह अच्छा प्रयास है। इस कहानी में चारदीवारी में घुट-घुटकर मरने वाली स्त्री के चौखटे को तोड़कर उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व देने का प्रयास किया गया है जो अपनी मर्जी की मालिक है। वह अपनी मर्जी से प्यार कर सकती है, खुद निर्णय ले सकती है कि किससे संबंध रखे और किससे न रखे। इस प्रकार, यह एक स्वच्छंद, स्वतंत्र और निर्भीक परंतु स्वभाव से कोमल, भावुक, संवेदनशील इसलिए कमजोर लड़की की यथार्थपरक कहानी है। यह कहानी इस दृष्टि से 'नई' है कि इसमें एक लड़की की सदियों से दबाई आत्मा की चीख और व्याकुलता को प्रस्फुटित होने का मौका मिला है।

Scanned by CamScanner

दूध और दवा : मार्कण्डेय
संबंधों का विघटन

'दूध और दवा' आम आदमी के रोज़मर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए किए जाने वाले संघर्ष और जद्दोजहद की कहानी है। व्यक्ति की अपनी स्वतंत्रता, अपना जीवन और अपनी अस्मिता को दूध और दवा के लिए तिलांजलि देनी पड़ती है। मध्यवर्गीय आदमी में अपने परिवार के हर सदस्य की इच्छा को पूरी करने की लालसा होती है लेकिन रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत जरूरतों के लिए ही इतना संघर्ष करना पड़ता है कि उसकी सारी सर्जनात्मकता चुक जाती है। अपनी कहानी सुना रहा व्यक्ति लेखक है। वह ईमानदार है, मेहनती है, कर्तव्यनिष्ठ है। परंतु 'उसकी बड़ी-बड़ी आँसुओं' में उसका सारा श्रम तिरोहित हो जाता है। मुन्नी को दो वक्त का दूध नहीं मिल पाता। लेखक तो मुन्नी के स्कूल जाने के लिए एक छोटी-सी मोटर खरीदना चाहता है। यह लालसा होरी की लालसा की ही तरह है। वह जीवन-भर गाय रखने और पालने के लिए संघर्ष करता रहता है, परंतु उसे कभी भी इसमें सफलता नहीं मिलती। इस कहानी का प्रवक्ता पात्र अपनी बेटी के लिए ढंग से दूध और दवा जुटा नहीं पाता, गाड़ी खरीदना तो दूर की बात रही। अपनी बेटी को देखकर उसके लिए गाड़ी खरीदने का अरमान उसके मन में जगता है। उसे अपनी इस सोच पर हैरानी होती है।

यह आर्थिक तंगी से परेशान एक लेखक की कहानी है। लेखक अपनी रचनाओं में डूब जाना चाहता है। उसकी कृतियाँ उसकी प्रेयसियाँ हैं जो उसे कड़ी ज़मीन की चुभन से पल-भर को उठाकर एक सुनहले, झिलमिलाते लोक में खींच ले जाती हैं। परंतु पारिवारिक उलझनों और परेशानियों के कारण घंटों और घंटों तक आँखें बंद रखने पर भी शिकार नहीं फँसता। पारिवारिक दायित्व उसकी

Scanned by CamScanner

सर्जनात्मकता को निगल गया है। ध्यान में रचना के बदले आता है बीवी का चेहरा और वह सोचता है कि बीवियो को हरदम शिकायत ही क्यो रहती हैं। उसके सीने में खारे पानी का समुद्र क्यो उफनता रहता है। क्यो उसमें से प्यार नहीं उफनता? क्या पति-पत्नी का रिश्ता शारीरिक सम्पर्क तक ही सीमित है। क्या यह शारीरिक सम्पर्क भी स्वार्थ के निमित्त है ताकि मुन्नी की आँखों के माँड़े की दवा या दूध का इंतजाम किया जा सके।

'दूध और दवा' दाम्पत्य जीवन और गृहस्थी की प्रासंगिकता पर प्रश्न-चिह्न लगाता है। जिस परिवार को हम स्वर्ग समझते हैं वह स्वार्थ के धागे से बंधा है। पति कमाकर दो पैसे लाता है और इसी के बल पर अपनी पत्नी पर धौंस जमाता है। पत्नी भी उसकी धौंस इसीलिए सहती है कि 'वह' दो पैसे कमाकर लाता है तो उसकी गृहस्थी चलती है और बच्चे के लिए दूध और दवा का इंतज़ाम होता है। पर इस दूध और दवा के चक्कर में पति-पत्नी के बीच का दाम्पत्य भाव समाप्त हो जाता है और वे मिल के मजदूर और मालिक के समान एक-दूसरे की खींचातानी करते रहते हैं। उनका संबंध 'प्रोफेशनल' हो जाता है। पति-पत्नी का संबंध 'निर्जीव' हो जाता है। पति अपने को कब्रिस्तान के बीच पाता है जहाँ चारो ओर टूटे-फूटे अस्थि-पंजर उभर आए हैं तो पति के प्रणय-निवेदन पर पत्नी कहती है -- "मेरे सीने में एक ज्वालामुखी है, जो कभी नहीं भड़केगा, यह मैं जानती हूँ।" और कहानी का अंत इस सवाल से होता है - "मैं समझ नहीं पाता कि स्त्रियाँ और मजदूर मालिकों को क्यों ओढ़े हुए हैं, महज़ इतनी सी बात के लिए या मुन्नी की आँखों के माड़े की दवा या उसके दूध के लिए!"

आज के आदमी की विडम्बना यह है कि वह न तो किसी का हो पाता है और न ही किसी को अपना बना पाता है। आज के युग में व्यक्ति संबंध तेज़ी से विघटित हुए हैं। वह भयभीत है। इस भय ने उसकी सृजन-क्षमता सोख ली है। वह दूध और दवा का जुगाड़ करने वाला यंत्र बन गया है। यंत्र बने रहने में ही वह अपने जीवन की सार्थकता मानता है। वह अपने परिवार, पत्नी और बच्चे से संतुलित संबंध बनाने के लिए संघर्षरत है। कहानीकार ने व्यक्ति के इसी संघर्ष को उभारने का प्रयास किया है।

जब मुन्नी का जन्म हुआ था तो बड़े अरमान थे। उसके लिए झूला खरीदा गया, बहुत सारे कपड़े बने थे, उसे ग्लूकोज़ में शहद दी जाती थी। बड़ी होकर वह फ्रेंच सीखेगी, पेंटर बनेगी। उसके बाद रुनकू का जन्म हुआ। बड़े-बड़े सपने संजोए थे। दोनो के लिए एक गाड़ी होगी, दोनो कॉन्वेंट जाएँगे। पर कुछ नहीं हो पाता। दूध और दवा के झमेले में पड़कर लेखक अपनी लेखनी और रचना से ही दूर चला जाता है।

Scanned by CamScanner

लेखक बार-बार अपनी रचना में डूबने का प्रयास करता है परंतु जीवन का यथार्थ उसकी कल्पना को तार-तार कर देता है। वह अपने को 'मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान' पाता है। वह अपने को एक विकलांग, विक्षिप्त योद्धा महसूस करता है जो पसीने और गर्द से लथपथ है! उसे लगता है – "हवा एकदम चुपचाप खड़ी है, मौलसरी की पत्तियाँ दम साधे हैं, युकलिप्टस की लंबी शाखें मर गई हैं और बच्चों के पार्क की बेघास की उजली ज़मीन घिसी हुई, निर्जीव हड्डी की तरह चमक रही है।" लेखक थक कर टूट गया है। वह घर से बाहर झाँकना चाहता है परंतु उसे लगता है घर की चारदीवारी में बंद रहना उसकी नियति है। उसे अब लौटने में काफी समय लगेगा। पता नहीं अपने रचना-संसार में वह लौट भी सकेगा या नहीं।

लेखक अपनी लेखनी को व्यावसायिकता से नहीं जोड़ना चाहता। वह यथार्थ से नहीं टकराना चाहता। वह आसमान में गुब्बारे में बैठकर उड़ना चाहता है लेकिन जैसे ही वह लेखनी उठाता है उसका यथार्थ उसे झकझोर कर ज़मीन पर उतार देता है। वह मुन्नी के बैलून को उतारने का प्रयास करता है जो ऊपर दीवार में जाकर अँटक गई है। लेखक आदर्श में जीना चाहता है परंतु उसे सत्य से रू-ब-रू होना पड़ता है जहाँ घर-गृहस्थी चलाने के लिए पैसे की जरूरत है। उसे इस सत्य से टकराना पड़ता है कि उसने घर को इसलिए स्वर्ग बना रखा है कि उसकी बीवी उसकी कमाई खाती है और एक खरीदे हुए दास से भी बदतर ढंग से उसकी सेवा करती है। अगर उसे यह पता लग जाए कि वह उसे नहीं किसी और से प्यार करती है तो वह हवा में नजर आता है क्योंकि उसे अपने से ज्यादा अपने पैसे पर भरोसा है।

लेखक अपनी रचना में जीवन के सुखमय क्षणों को पिरोना चाहता है परंतु उसमें जीवन के दाग, मवाद और गंदगी ही प्रस्फुटित होती है। रचनाकार के इस द्वंद्व को कहानी में बड़ी तल्खी और सूक्ष्मता से उभारा गया है।

इस कहानी में आदर्श और यथार्थ की टकराहट का मार्मिक चित्रण हुआ है। लेखक अपनी रचना में मुन्नी के दूध और दवाइयों को शामिल नहीं करना चाहता परंतु बार-बार वही उसकी रचना का दरवाज़ा खटखटाते हैं। वह उन्हें परे हटाने का प्रयत्न करता है परंतु उसे इसमें सफलता नहीं मिलती। रचना अर्थ का साधन नहीं है, वह जीवन की विद्रूपताओं को प्रकट कर ही जीवंत हो सकती है। लेखक जिस प्रसव वेदना से गुज़रता है उसी को रचना का विषय बनाया जा सकता है। जीवन से कट कर रचना नहीं बन सकती। रचना तो जीवन की कठिनाइयों से होकर ही बनती है। दूध और दवा से पृथक रचना कुछ देर हवा में तो रह सकती है पर खून से लथपथ रचना ही सच्ची रचना होती है।

Scanned by CamScanner

एक और जिंदगी : मोहन राकेश

सुख की तलाश

'एक और जिंदगी' ग्लानि की आग में जलते और तपते व्यक्ति की कहानी है। कहानी का पूरा ताना-बाना यातना और संताप के धागे से बुना गया है। आद्यांत इस कहानी में तनाव बना रहता है। कहानी का आरंभ तनाव से होता है, गुजरती भी है तनावों से होकर और परिणति भी तनाव में ही होती है। यह तनाव मात्र व्यक्तिगत नहीं है बल्कि समकालीन जीवन की टूटन और विसंगति की भयावहता का परिचायक है।

'नई कहानी' के कहानीकार की कहानियों में किसी न किसी प्रकार का 'संकट' या क्राइसिस अवश्य होता है और इसी 'क्राइसिस' के बीच कहानी जन्म लेती है, बढ़ती है और एक जगह ज़ाकर गुम हो जाती है। ध्यातव्य हो कि इन कहानियों का कोई आदि-अंत नहीं होता बस 'क्राइसिस' को पकड़ने एवं उद्घाटित करने वाले कुछ क्षण, कुछ प्रसंग होते हैं।

'एक और जिंदगी' एक व्यक्ति की जिंदगी को तलाशती और भटकती आत्मा की कथा है। इसमें एक व्यक्ति के टूटे परिवार की कथा आती है। वह एक टूटे परिवार को छोड़ दूसरा परिवार बनाने की कोशिश करता है और हादसे का शिकार होता है। जब उसे मालूम होता है कि उसकी नई बीवी पागल है तो उसे ऐसा लगता है कि उसकी दुनिया ही लुट गई। वह लौटकर फिर अपने टूटे परिवार के पास जाता है जहाँ अंततः उसका बेटा भी उसे नकारने लगता है।

'एक और जिंदगी' एक टूटे परिवार और परिवार की खोज में भटकते एक व्यक्ति की कहानी है। प्रकाश और बीना पति-पत्नी हैं। उनकी शादी थोड़े ही दिन

Scanned by CamScanner

टिक पाती है और वे अलग-अलग रहने लगते हैं। वे अलग-अलग रहते हैं; कभी-कभी मिलते भी हैं। इसी 'मिलन' के फलस्वरूप उनके एक बच्चा भी होता है। बीना सोचती है कि उसे प्रकाश ने जान-बूझकर फँसा दिया है। प्रकाश सोचता है कि उससे अनजाने में अपराध हो गया। बच्चा हुआ। अपनी माँ के पास पलता-बढ़ता रहा।

बीना लखनऊ में अपने पिता के घर बच्चे की वर्षगाँठ मनाने का निर्णय करती है। इसकी सूचना वह प्रकाश को दे देती है। प्रकाश भी उसे लखनऊ पहुँचने की सूचना दे देता है। वह बीना से अनुरोध करता है कि बच्चे का जन्मदिन उसके निवास पर ही मनाया जाए। पर मानिनी बीना प्रकाश का अनुरोध विनयपूर्वक ठुकरा देती है। जन्मदिन के अवसर पर बच्चा प्रकाश के पास नहीं आता है। बच्चे के न आने से वह रात-भर सो नहीं पाता और उसे लगता है कि उसके दिमाग को कोई छेनी से काट रहा है।

पति-पत्नी में बच्चे को लेकर विवाद होता है। जन्मदिन ने दोनो के मन में एक और गाँठ तो लगा ही दी है। प्रकाश पिता होने का अधिकार जताता है तो पढ़ी-लिखी अफसर पत्नी का जवाब है -- "आपके पास दिल होता, तो क्या आप पार्टी में न आते? आप मुझसे पूछें तो मैं तो कहूँगी कि यह एक आकस्मिक घटना ही है कि आप इसके पिता हैं।"

पति-पत्नी का यह ठंडा और कृत्रिम संबंध अजीब-सा लग सकता है परंतु यह आधुनिक यांत्रिक शहरी जीवन की एक सच्चाई है। पति-पत्नी दोनो पढ़े-लिखे हैं, अफसर हैं, अच्छा कमाते हैं फिर क्यों सहें किसी की धौंस। अहं की टकराहट, मन का न मिलना, एक-दूसरे को समझ न पाना, एक-दूसरे पर शक करना आदि पति-पत्नी की दूरी और परिवार के टूटने का कारण बनता है। कहानी में बस इतनी-सी सूचना दी गई है कि "विवाह के कुछ महीने बाद से ही पति-पत्नी अलग-अलग रहने लगे थे। विवाह के साथ जो सूत्र जुड़ना चाहिए था, वह जुड़ नहीं सका था।"

बीना के मन में कड़वाहट भरी हुई है। कड़वाहट के कारण की चर्चा कहानीकार ने नहीं की है। इससे कहानीकार का पुरुष पात्र के प्रति पूर्वाग्रह झलकता है। प्रकाश खुद अपनी कहानी कह रहा है, इसलिए उसी का विचार, दृष्टिकोण और समझ पाठक के सामने आती है। बीना के दिल पर लगने वाली चोटों का जिक्र नहीं किया गया है। केवल यह बताया गया है कि बीना का अपने पति के प्रति व्यवहार बहुत ही शुष्क, ठंडा और एक हद तक निर्मम भी है। आम तौर पर भारतीय पत्नी अपने पति के प्रति इतनी कठोर नहीं होती है। वह पति के साथ सामंजस्य और तालमेल बिठाने की हर संभव कोशिश करती है। पति को छोड़ना उसका अंतिम रास्ता होता है। इस कहानी को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि

Scanned by CamScanner

प्रकाश तो 'राम जी' है और बीना 'शूर्पणखा'। लेखक लक्ष्मण बनकर उसकी नाक भी काट लाया है।

कहानी से बीना का जो चरित्र उभरता है वह प्रकाश की दृष्टि से हमारे सामने आता है। कैमरा जैसे-जैसे हमें दिखाता है हम फिल्म वैसे-वैसे ही देखते हैं। कैमरा हमारी दृष्टि और सोच को भी प्रभावित करता है। इसी तरह एक पात्र की निगाह से दूसरे पात्र को देखना या दिखाना दर्शक या पाठक को वास्तविकता के एक ही पहलू से परिचित कराता है। जो कुछ हमें मालूम पड़ता है, उसके अनुसार बीना शुष्क, ठंडी, 'खड़ूस' और घमंडी महिला है। उसे अपने पति से चिढ़ है, घृणा है। बच्चे के मामले में वह उसे अदालत तक खींचने के लिए तैयार है। लखनऊ में अपने पति प्रकाश के घर बच्चे को न लाना उसकी निष्ठुरता का प्रमाण है। अंततः वह बड़ी निष्ठुरता के साथ प्रकाश से अपना रहा-सहा संबंध तोड़ लेती है 'फिजूल की हुज्जत में कुछ नहीं रखा है। बच्चे-वच्चे तो होते ही रहते हैं। तुम संबंध विच्छेद करके फिर से ब्याह कर लो, तो घर में बच्चे ही बच्चे हो जाएँगे। समझ लेना कि इस बच्चे के साथ कोई दुर्घटना हो गई थी --' इतनी संवेदनहीनता और निर्दयता सामान्य नारी में नहीं हो सकती है। या फिर यह अकारण नहीं हो सकती है। कोई न कोई कारण तो होगा कि वह अपने पति के प्रति इस हद तक निष्ठुर है कि उसे हर समय आहत करना चाहती है। पढ़ी-लिखी होना इसका कारण नहीं हो सकता। पढ़-लिखकर तो मनुष्य की समझ विकसित होती है, वह समझदार और 'मैच्योर' हो जाता है। पति-पत्नी के पढ़े-लिखे होने से समझ और समझदारी पुख्ता होनी चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं कि पढ़ा-लिखा पुरुष पढ़ी-लिखी नारी को परंपरागत ढंग से दबाना चाहता हो और नारी इसे परंपरागत भारतीय नारी के समान सह नहीं पाती हो। विश्वनाथ त्रिपाठी अपनी पुस्तक 'समकालीन कहानी : कुछ विचार' में लिखते हैं 'एक और जिंदगी के नायक की पत्नी और भूतपूर्व प्रेमिका नौकरी करती है। वह 'बल्मा सिधारे परदेस' गाने वाली नहीं है। ऐसे नारी-पात्र आए जो खुले आम वैवाहिक बंधन को तोड़ सकते थे, ...' (पृ.103) त्रिपाठी जी के उपर्युक्त विचारो को पढ़ने से ऐसा लगता है कि पत्नी या प्रेमिका नौकरी करती है इसलिए खुलेआम वैवाहिक संबंध तोड़ सकती है। क्या मोहन राकेश और विश्वनाथ त्रिपाठी दोनो ही पुरुष मानसिकता और पूर्वाग्रह को तो सामने नहीं रख रहे हैं? आज भी तमाम आधुनिकता, प्रगतिशीलता और सशक्तिकरण के बावजूद नारी को ही सबसे ज्यादा पिसना होता है। वह नौकरी पर भी जाती है तो उसे पुरुष-दंश सहना पड़ता है और घर पर तो पति है ही। इसलिए यह कहना कि वह नौकरी करती है इसलिए खुलेआम वैवाहिक संबंध तोड़ती है, गलत सोच का परिणाम है। भारतीय परिवेश में अभी भी पुरुषों के मुकाबले में महिलाओं को ज्यादा सहना पड़ता है। और अगर कोई इस जुल्म को नहीं सहती तो खुद 'राम' बनकर उसे 'शूर्पणखा' सिद्ध करना

Scanned by CamScanner

कहाँ का न्याय है। और यह कहना कि वह 'बलमा सिधारे परदेस' गाने वाली नारी नहीं है, नौकरी करने वाली नारी है, नारी का अपमान करना ही नहीं है बल्कि उसे ठीक से न समझ पाना भी है। एक बात और विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने लिखी है जिस पर गौर किए जाने की जरूरत है : "नारी-शिक्षा के प्रसार से दूरगामी परिवर्तन यह आ रहा था कि पत्नी, प्रेमिका, रोज़गारयाफ्ता यानी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने लगी थी। इसका भी परिणाम था कि प्रेमिका-पत्नी को ही विह्वल नहीं, पति-प्रेमी को भी विह्वल दिखाया जाने लगा।" सवाल यह है कि नारी के आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने पर पुरुष (प्रेमी, पति) क्यों विह्वल होने लगे हैं। इसीलिए न कि वे अपनी पत्नी-प्रेमिका पर धौंस नहीं जमा सकते, बरगला नहीं सकते। पत्नी अब उनके पैर की जूती नहीं बल्कि समानता के स्तर पर खड़ी होकर बात करने की 'जुर्रत' कर रही है। यह कष्ट है पुरुषों का जो उन्हें विह्वल कर रहा है। वे नारी के इस रूप को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं और यही परिवार के टूटने का मूल कारण है। परिवार टूटने का कारण स्त्री नहीं, पुरुष है। कहानी में भी इस दृष्टि का अभाव है। यह इस कहानी की कमी है। यह परिवार के टूटने का कोई ठोस कारण नहीं बताता क्योंकि उसे डर है कि इससे पुरुष की असलियत सामने आ जाएगी। वह बच्चे के मामले में पत्नी का थोड़ा-बहुत विरोध करता है। पर वह अच्छे बच्चे की तरह उसका सब कहना मान लेता है। अगर ऐसा ही 'पत्नी भक्त' पति है तो यह संबंध-विच्छेद क्यों? इस संदर्भ में उसका यह सोचना निरर्थक लगता है कि "क्या सचमुच इन्सान पहले की जिंदगी को मिटाकर नए सिरे से जिंदगी आरंभ कर सकता है? क्या सचमुच जिंदगी के कुछ वर्षों को एक दुःस्वप्न की तरह भूलने का प्रयत्न किया जा सकता है? बहुत-से इन्सान हैं जिनकी जिंदगी कहीं न कहीं किसी न किसी दोराहे से गलत दिशा की ओर भटक जाती है। क्या यही उचित नहीं कि इन्सान उस रास्ते को बदलकर अपनी गलती सुधार ले? आखिर इन्सान को जीने के लिए एक ही जीवन तो मिलता है - वही प्रयोग के लिए और वही जीने के लिए। तो क्यों इन्सान एक प्रयोग की असफलता को जीवन की असफलता मान ले?"

उपर्युक्त पंक्तियाँ किसी और की नहीं खुद मोहन राकेश की निजी जिंदगी से उपजी सोच है। उनका दाम्पत्य जीवन बहुत सफल नहीं रहा और उन्होंने भी दाम्पत्य निर्वाह के क्षेत्र में प्रयोग किए थे। प्रकाश भी एक प्रयोग करता है - एक और जिंदगी जीने का प्रयास करता है। परंतु उसे इसमें सफलता नहीं मिलती। सफलता की बात तो दूर 'आकाश से गिरा खजूर पर लटका' वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है। उसका दोस्त धोखे से अपनी अर्ध-विक्षिप्त बहन से उसकी शादी करा देता है। इस यंत्रणा को झेलने से अच्छा तो मर जाना है। प्रकाश की पीड़ा देखकर पाठक के मन में भी उसके प्रति सहानुभूति जन्म लेती है, हालांकि

Scanned by CamScanner

कहानी में शुरू से ही प्रकाश से सहानुभूति पैदा करने के अनेक अवसर पैदा किए गए हैं परंतु सचेत पाठक के मन में उसके प्रति सहानुभूति पैदा नहीं होती। यह उसका पाखंड लगता है। हाँ! अर्ध-विक्षिप्त लड़की से शादी होने पर तो उसपर दया आती है। असल में, प्रकाश की पीड़ा के दंश को तीव्र और तीखा बनाने के लिए यह प्रसंग रचा गया है।

प्रकाश के दोनो 'प्रयोग' असफल होते हैं। तो क्या सवाल उठता है कि शहरों में दाम्पत्य जीवन टूट रहा है। हर वर्ष कितनी शादियाँ होती हैं और कितने तलाक होते हैं, इसका आँकड़ा देखना रोचक होगा। पति-पत्नी में तकरार होती है, झगड़े होते हैं पर उनका अलग होना या परिवार का टूटना तो चरम परिणति है। इसमें दोनो में से किसी का व्यक्तिगत स्वभाव और विवाहेतर संबंध प्रमुख कारण हो सकते हैं। इसमें व्यक्तिगत स्वभाव की तो कुछ झलक मिलती है। बीना स्वाभिमानी और दृढ़ महिला है। वह पुरुष के सामने झुकने वाली नहीं। वह आर्थिक दृष्टि से समर्थ है। "बीना में बहुत अहं था, वह उसके बराबर पढ़ी-लिखी थी, उससे ज्यादा कमाती थी। उसे अपनी स्वतंत्रता का बहुत मान था और वह समझती थी कि किसी भी परिस्थिति का वह अकेली रहकर मुकाबला कर सकती है। शारीरिक दृष्टि से भी बीना काफी लंबी-ऊँची थी। और उसपर भारी पड़ती थी। बातचीत भी खुले मरदाना ढंग से करती थी; वह अब एक ऐसी लड़की चाहता है जो हर तरह से उसपर निर्भर करे, जिसकी कमज़ोरियाँ एक पुरुष के आश्रय की अपेक्षा रखती हों।" लेकिन वह अपने पति के प्रति बहुत निर्मम है। इस निर्ममता का कारण? यहाँ पर लेखक मौन है। हो सकता है यह बताने से उसका पक्ष कमजोर हो जाता। इसमें पुरुष को सीधा-सादा, अपने बेच्चे के प्रति समर्पित और अपनी पत्नी, पूर्व-पत्नी के प्रति सम्मान का भाव रखने वाला दिखाया गया है। प्रकाश में कहीं कोई खोट नहीं। वह 'परफेक्ट मैन' है। सारी गलती, सारा दोष बीना का है। दोषारोपण प्रत्यक्ष तो नहीं है परंतु कहानी पढ़ने से यही निष्कर्ष निकलता है कि सारी गलती बीना की ही है। प्रकाश तो दूध के धुले हैं। यदि वास्तव में ऐसा होता तो परिवार टूटता ही नहीं। परिवार टूटने का कारण न बताकर मोहन राकेश ने इस कहानी को अविश्वसनीय बनाने में मदद की है।

बच्चा इस कहानी के केंद्र में है और वह बार-बार घूम-फिरकर कहानी का 'न्यूक्लियस' बन जाता है। माँ-बाप के तनाव और विभाजन से सबसे ज्यादा बच्चे का व्यक्तित्व खंडित होता है। बच्चे को माँ और पिता दोनो के प्यार की समान रूप से जरूरत होती है। माता-पिता की गलतियों का खामियाजा बच्चों को भुगतना पड़ता है। यह पाप है। इस कारण उनका व्यक्तित्व खंडित हो जाता है। उसमें कुछ न कुछ कमी रह जाती है। वह कुंठा का शिकार भी हो सकता है। मन्नू भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में इसी समस्या को कथा-रूप दिया गया है।

Scanned by CamScanner

परिवार की तलाश करता प्रकाश इतना सब कुछ होने के बावजूद अपने बच्चे को नहीं भूल पाता। वह अपने बेटे को तहे-दिल से प्यार करता है। दूसरी शादी और उसमें हुई बर्बादी से वह और भी अकेला हो जाता है। वह अपने बेटे में अपनी खुशी, अपना चैन और अपनी मुक्ति ढूँढता है।

कहानी की शुरुआत प्रकाश के इंतज़ार से होती है। वह बालकोनी में खड़ा अपने बेटे का इंतज़ार कर रहा है। यह कोई हिल स्टेशन है। प्रकाश की बेताबी का उल्लेख लेखक ने इन शब्दों में किया है : "और उस एक क्षण के लिए प्रकाश के हृदय की धड़कन जैसे रुकी रही। कितना विचित्र था वह क्षण - आकाश से टूटकर गिरे हुए नक्षत्र-जैसा!......फिर भी न जाने क्यों उसे लग रहा था जैसे बहुत समय से, बल्कि कई दिनों से, वह उनके वहाँ से गुज़रने की प्रतीक्षा कर रहा हो, जैसे कि उन्हें देखने के लिए ही वह कमरे से निकलकर बालकनी पर आया हो और उन्हीं को ढूँढती हुई उसकी आँखें मंदिर वाली सड़क की तरफ मुड़ी हों।.....परंतु एक क्षण में सहसा वे आकृतियाँ इस तरह उसके सामने स्पष्ट हो उठी थी जैसे जड़ता के क्षण में अवचेतन की गहराई में डूबा हुआ कोई विचार एकाएक चेतना की सतह पर कौंध गया हो।" बाहर भी कोहरा है और प्रकाश के अंदर भी कोहरा छाया हुआ है। उसकी खामोशी एक ऐसी तूफान की तरह है, जो हवा न मिलने के कारण अंदर ही अंदर घुट रही हो। इसलिए वह अपने बेटे को पुकार भी नहीं पाता। उसका कंठ अवरुद्ध हो जाता है। वह बदहवास होकर उनके पीछे दौड़ता है। उसकी यह बदहवासी पाठक को अंदर तक कचोटती है। उसके प्रति मन में सहानुभूति भी होती है। पैर में बिना जूता डाले अपने बच्चे और बीवी के पीछे भागना वस्तुतः अपने खोए हुए परिवार को ढूँढने या पाने की तीव्र लालसा का प्रतीक है। दूसरी शादी से खाई पटकनी से इस लालसा और आवेग की तीव्रता दीवानगी की हद तक बढ़ गई है। परंतु उनके पास पहुँच कर वह ठिठक जाता है। इस हिचक, संकोच और ठिठक को उतार फेंककर वह बेटे का नाम लेकर पुकारता है - 'पाशी'। लेखक कहता है - "कोहरे में अचानक कई-कई बिजलियाँ कौंध गईं।" इसके बाद पापा और बेटे में हुआ संवाद मार्मिक है। इसमें बेटे और पापा दोनो का अकेलापन, एक-दूसरे की जरूरत और उनके प्यार का इजहार हुआ है। बच्चा इतना संवेदनशील है कि पापा के मिलने के बाद वह माँ के साथ खिलनमार्ग जाने का विचार छोड़ कर दिन पापा के साथ गुजारने का निश्चय करता है। पापा और मम्मी में कोई बातचीत नहीं होती। सारी बात बच्चे के माध्यम से ही होती है। मम्मी पापा एक-दूसरे से आँख मिलाते कतराते हैं।

निर्मल वर्मा की कहानी 'परिन्दे' के समान इस कहानी में भी कोहरे का बार-बार जिक्र हुआ है। असल में जितना कोहरा बाहर है उससे ज्यादा प्रकाश के भीतर धँसा हुआ है। उसे अपना ही जीवन रहस्यमय मालूम होने लगता है। बाहर

Scanned by CamScanner

कोहरे के बादल हवा से कई-कई रूप लेकर इधर से उधर भटक रहे हैं और प्रकाश अपनी जिंदगी को एक मायने देने के लिए इधर से उधर भटक रहा है। उसका आकाश और कोहरे में अर्थ खोजना वस्तुतः अपने ही जीवन में अर्थ की खोज करना है। प्रकृति में उसे अपनी छवि दिखाई पड़ने लगती है। कोहरे में कहीं-कहीं दिखाई पड़ने वाली देवदार की फुनगियाँ कोहरे के आकाश पर लिखी अस्त-व्यस्त लिपि जैसी दिखाई देती हैं। जैसे ही यह लकीर गुम होने लगती है वह बेचैन हो उठता है। उस लकीर को बचाने के लिए तड़फड़ा उठता है। वह तनाव से घिर जाता है। उस लकीर में उसे आशा की किरण दिखाई पड़ती है। लगता है अगर इस लकीर को बचा लिया तो और लकीरें बनाई जा सकती हैं। पटरी से उतरी जीवन की गाड़ी को फिर से पटरी पर दौड़ाया जा सकता है।

कोर्ट में तलाक के कागज़ पर हस्ताक्षर करते समय छत के पंखे से टकराकर एक चिड़िया का बच्चा आ गिरता है। माँ-बाप से बिछड़े चिड़िया के बच्चे के लिए कोई कहता है "काट दिया होता तो बल्कि अच्छा था। अब इस तरह बेचारा क्या जियेगा?" इस छोटे प्रसंग के जरिए लेखक माँ-बाप के जुदा होने से बच्चे को होने वाले नुकसान की ओर इशारा करता है। जुदा हो रहे हैं माँ-बाप पर जाने-अनजाने आहत हो रहा है बच्चा। उसे अधूरी और अपंग जिंदगी जीने के लिए बाध्य किया जा रहा है। लेखक इस ओर इशारा करते हुए लिखता है -

"तब तक पति-पत्नी ने कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए थे। बच्चा उस समय कोर्ट के अहाते में कौवों के पीछे भागता हुआ किलकारियाँ मार रहा था। वहाँ धूल उड़ रही थी और चारो तरफ मटियाली-सी धूप फैली थी...।"

यह मटियाली धूप और चारो तरफ उड़ती धूल बच्चे के भविष्य की ओर ही इशारा करती है।

प्रकाश अपने बच्चे से बहुत प्यार करता है। दूसरी शादी भी वह इसी ललक से करता है कि वह अपने अतीत को बच्चों में भूल जाएगा। परंतु नए प्रयोग के असफल होने पर बच्चे का आकर्षण उसे फिर से अतीत की ओर खींचता है। इसीलिए वह बच्चे के पीछे-पीछे भागता पहाड़ पर पहुँच जाता है। बच्चा उससे काफी घुल-मिल जाता है। बच्चे के साथ प्रकाश को लगता है कि उसके जीवन का कुहरा छँटने लगा है। परंतु जब बच्चा उसे छोड़ कर जाता है और मम्मी से कहता है कि पापा का घर बहुत गंदा है तो उसका दिल टूट जाता है। मासूमियत में कही गई बात भी उसे अंदर तक कचोट जाती है। वह फिर अकेला हो जाता है।

'नई कहानी' में मनुष्य का अकेलापन बार-बार सामने आता है। असल में, यह अकेलापन मनुष्य के जीवन में आई यांत्रिकता और स्त्री को अपने समकक्ष न मानने की मजबूरी के कारण उत्पन्न हुई है। पुरुष पत्नी के रूप में आश्रिता चाहता

Scanned by CamScanner

है। वह ऐसी अर्द्धांगिनी चाहता है जो उसे पति-परमेश्वर माने। वह पत्नी को बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहता। यदि पत्नी बराबरी का हक माँगती है तो परिवार टूटता है और टूटने की सारी जिम्मेवारी पत्नी पर मढ़ी जाती है। निष्कासन तो हमेशा सीता का ही होता है। इसमें दरकिनार होता है - लव-कुश! माँ-बाप के अहं का शिकार बच्चे को होना पड़ता है और वह गिरे हुए चिड़िया के बच्चे की तरह तड़पता रहता है।

यह कहानी प्रतीकों में चलती है। प्राकृतिक दृश्यों का इस्तेमाल प्रतीकों के रूप में किया गया है। ये प्रकाश के मन और मनःस्थिति को दर्शाते हैं। जैसे,

"घास के रेशमी विस्तार पर कोहरे का आकाश इस तरह झुका हुआ था जैसे वासना का उन्माद उसे फिर से घिर आने के लिए प्रेरित कर रहा हो।"

इन पंक्तियों में घास और आकाश क्रमशः स्त्री और पुरुष के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से प्रकाश की अतृप्त वासना व्यंजित हुई है। इसी प्रकार,

"बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही थी - पिछली रात जैसी वर्षा हुई थी, उससे भी तेज़। खिड़की के शीशों से टकराती हुई बूंदें बार-बार एक चुनौती लिए हुए आती थीं। परंतु सहसा बेबस होकर नीचे ढुलक जाती थीं। उन बहती हुई धाराओं को देखकर लगता था जैसे कई एक चेहरे खिड़की के साथ सटकर अंदर झाँक रहे हों और लगातार रो रहे हों। किसी क्षण हवा से किवाड़ खुल जाते थे, तो वे चेहरे जैसे हिचकियाँ लेने लगते थे। हिचकियाँ बंद होने पर वे गुस्से से घूरने लगते। उनका चेहरों के पीछे अंधेरा छटपटाता हुआ दम तोड़ रहा था।"

यह प्रकृति चित्रण प्राकृतिक सौंदर्य उद्घाटित करने या कहानी में काव्यात्मकता पैदा करने के लिए नहीं किया गया है। बल्कि कहानी के प्रमुख-पात्र प्रकाश की पीड़ा और दंश को व्यंजित करना इसका उद्देश्य है। कहानी का अंत एक दृश्य के साथ होता है जो प्रतीकात्मक भी है -

"उसके साथ-साथ चल रहा था एक भीगा हुआ कुत्ता - कान झटकता, खामोश और अंतर्मुखी।"

प्रकाश का सब कुछ छूट गया है। आज उसके साथ न उसका बच्चा है, न पत्नी, न संस्कार। साथ में है तो उसका पशु-धर्म। बारिश में भीगा कुत्ता इसी का प्रतीक है।

कहानी कहने का ढंग बहुत रोचक है। रहस्य और रोमांच के साथ कथा की शुरुआत होती है। एक व्यक्ति बालकोनी में बैठा है। वह एक बच्चे और स्त्री को देखकर उनके पीछे दौड़ता है। पाठक साँस रोके देखता रहता है कि यह क्या हो रहा है। धीरे-धीरे रहस्य का आवरण उठता है और कहानी के हिस्से खुलते चले

Scanned by CamScanner

जाते हैं। कालक्रम को तोड़ना 'नई कहानी' का नया शिल्प-प्रयोग है। हालांकि प्रेमचंद, प्रसाद, अज्ञेय ने अपनी कहानियों में कालक्रम को तोड़ना शुरू कर दिया था पर सन 50 के आसपास जो कहानियाँ लिखी गईं उनमें 'कथा' के ढाँचे को पूरी तरह तोड़ दिया गया। कहानी कथा न रहकर आत्मकथा रह गई। कहानी मन में उठने वाले बवंडरों को उद्घाटित करने लगी। कहानी अतीत और वर्तमान को टुकड़ों-टुकड़ों में पेश करने लगी। मन में उठने वाले विचारो की तरह जीवन अलग-अलग प्रसंगों में सामने आने लगा। इसमें कालक्रम और समय की सीमा गडमगड्ड होने लगी। परंतु कहानी कहने का गुण मौजूद रहा। आगे क्या होगा की उत्सुकता और रोमांच कहानी का गुण बना रहा। प्रसंगों की मार्मिकता और तनाव का ताना-बाना कहानी का प्राण बना रहा। बस कहने का ढंग बदल गया। कहानी की शुरुआत और अंत की धारणा को नए कहानीकारों ने ध्वस्त कर दिया। लेकिन कहानी की शुरुआत और अंत का खूब ध्यान रखा गया। कहानी इस तरह शुरू की गई कि आगे पढ़ने की उत्सुकता बनी रही और कहानी उस चरम बिंदु पर ले जाकर छोड़ दी गई कि पाठक के दिल को वह हमेशा कुरेदती रहे, कचोटती रहे। इस दृष्टि से यह कहानी रोचक, विचारोत्तेजक और मन को मथने वाली है।